डाक पंजीयन क्र. L/ RNP/म.प्र./ मन्दसौर/122/ 2021- 23

ई-पेपर www.guruexpress.live

बात आपकी, शब्द हमारे

# गुरु एक्सप्रेस

सुबह का अखबार

संपादक – आशुतोष नवाल

वर्ष 18 | अंक 59 | पृष्ठ 4 | मन्दसौर | शुक्रवार 08 दिसम्बर 2023 | मूल्य 2 रुपया


## टैंकर से मिला डोडाचूरा, एक युवक गिरफ्तार

**नारायणगढ़, 7 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस।** टैंकर में छिपाकर ले जाए जा रहे 332 किलो डोडाचूरा पुलिस जब्त कर एक युवक को गिरफ्तार किया है।

मल्हारगढ एसडीओपी नरेंद्र सोलंकी ने बताया की नारायणगढ टीआई जितेंद्र सिंह सिसोदिया की टीम को मुखबीर से सूचना मिली थी की एक टैंकर डोरवाडा से बादरी की तरफ जाने वाला है। जिसमें अवैध रूप से डोडाचूरा की तस्करी की जा रही है। मुखबीर से मिली सूचना पर झार्डा चौकी पर पदस्थ एसआई मनोज गर्ग की टीम को रवाना किया। पुलिस ने बादरी फंटा पर नाकाबंदी कर टैंकर को रोककर तलाशी ली जिसमें 35 प्लास्टिक के कट्टे में 3 क्विंटल डोडाचूरा बरामद किया। पुलिस ने मौके से ट्रैक्टर चालक लोकेन्द्र सिंह पिता नाहर सिंह चौहान जाति सौंधिया राजपुत उम्र 26 साल निवासी डोरवाडा, मंदसौर को गिरफ्तार किया है। जिससे पूछताछ की जा रही है।

# अब मंत्री बनने के लिए तेज हुई उठापटक

**संसदीय क्षेत्र में तीन से चार मंत्री बनना तय, कईयों की तगड़ी दावेदारी, तीनों भी हो सकते हैं रिपीट**

**मंदसौर, 7 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस।** विस चुनाव के बाद अब मंत्री पद के लिए जुगाड तुगाड शुरु हो गया है। पहले मंदसौर नीमच जिले को मिलाकर क्षेत्र में तीन मंत्री थे। अब संसदीय क्षेत्र की बात की जाए तो भाजपा के सात में से छह विधायक तगडी दावेदारी कर रहेहै। वर्तमान मंत्री फिर से रिपीट भी हो सकते हैं। नए चेहरे में किसको मौका मिलेगा, फिलहाल इसके लिए उठापटक चल रही है।

विधानसभा में देखें तो कई ऐसे चेहरे है, जिनको लोकसभा में कामकाज का अनुभव रहा है। वे लोकसभा सदस्य के दौरान केंद्र सरकार की अलग-अलग समिति में रहे व तत्कालीन समय के अनुभव अब राज्य सरकार के गठन के समय काम आ सकते है। रतलाम, मंदसौर व नीमच की बात की जाए तो परपंरागत चेहरों को लोकसभा चुनाव के बाद शपथ दिलाने के बारे में दावा किया जा रहा है। ऐसे में भाजपा का नए चेहरों पर भरोसा कितना कारगार होगा या जैसा दावा किया जा रहा है, वैसा होगा भी या नहीं, ये कुछ दिन में साफ हो जाएगा।

### देवड़ा शिव के तो हरदीप ज्योतिरादित्य के खास...

मंदसौर में जगदीश देवड़ा व हरदीप सिंह डंग सरकार में मंत्री रहे। देवडा वित्त मंत्रालय लंबे समय से संभाल रहे है। इस बार बडे अंतर से चुनाव जीते है, लेकिन नए चेहरे को अवसर के नाम पर इनका दावा कमजोर हो रहा है। हालांकि मुख्यमंत्री चौहान की पसंद देवडा है, लेकिन पूरे प्रदेश में जिस तरह से कर्मचारियों ने सरकार के खिलाफ वोट दिया, उससे ये संदेश गया है कि कर्मचारियों को खुश करने में वित्त मंत्रालय पूरी तरह से नाकारा साबित हुआ। हालांकि जातिगत आरक्षण में इनका दावा मजबूत है। इनके अलावा डंग केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया के करीबी है। उपचुनाव के मुकाबले इस बार कुछ कम वोट से चुनाव जीते है। ऐसे में दावेदारी कितनी मजबूत है, ये मंत्री मंडल की शपथ के दौरान सामने आएगा। भानपुरा से भाजपा के चंदरसिंह सिसौदिया ने दूसरी बार कांग्रेस के बडे नेता सुभाष सोजतिया को हराया है। इसके अलावा पार्टी की युवा लाइन में फीट बैठ रहे है। हालांकि, वे ज्यादा सीनियर नही है।

### नीमच में सकलेचा की दावेदारी कमजोर...

नीमच की बात की जाए तो यहां जावद से विधायक ओमप्रकाश सखलेचा बडी मुश्किल से चुनाव जीते है। हर चुनाव में उनकी जीत का नंबर कम होता जा रहा है। इस बार इनका दावा पार्टी गाइड लाइन के मुकाबले कमजोर नजर आ रहा है। नीमच शहर से दिलीप सिंह परिहार चौथी बार विधायक बने है। राज्य सरकार की किसी समिति में जिम्मेदारी का अनुभव कम है। करणी सेना सरकार के खिलाफ है, ऐसे में राजपूत मतदाताओं को साधने इनको राज्य मंत्री या इस स्तर का दर्जा मिल सकता है। मनासा से दूसरी बार युवा चेहरा अनिरूद्ध मारू की जीत हुई है। साइलेंट तरीके से काम करने वाले मारू संघ की पसंद तो है ही इनके अलावा मुख्यमंत्री चौहान से लेकर केंद्रिय गृह मंत्री अमित शाह से नजदीकी भी मंत्री मंडल में जगह दिलवा सकती है।

### रतलाम में इनका दावा कितना खरा..?

रतलाम जिले में पांच सीट में से चार पर भाजपा की जीत हुई है। तीसरी बार चेतन्य काश्यप बडे वोट के अंतर से जीतकर आए है। जैन समाज का प्रतिनिधित्व देखते हुए इनका दावा मजबूत है, लेकिन पार्टी के ही एक अन्य वरिष्ठ जयंत मलैया भी चुनाव जीते है। काश्यप पूर्व में योजना आयोग के उपाध्यक्ष रहे है तो मलैया मंत्री रहे है। ऐसे में इस समाज से कोई एक चेहरा ही शामिल हो सकता है। आलोट आरक्षित सीट से लोकसभा के पूर्व सदस्य चिंतामणी मालवीय चुनाव बडे अंतर से जीते है। वे लोकसभा की सदस्यता के दौरान वित्त मंत्रालय, कार्पोरेट मामले के सलाहकार समिति के सदस्य रहे है। पार्टी के प्रदेश उपाध्यक्ष भी है। ऐसे में आलोट से इनका दावा है। जावरा से राजेंद्र पांडे भी बडे अंतर से चुनाव जीतकर आए है। गृह मंत्री नरोत्तम मिश्रा की पराजय के बाद एक ब्राहमण नेता की कमी पूरी करने इनको मंत्री का ओहदा मिल सकता है। हालांकि काश्यप लगातार बडे मतों से जीत हासिल कर चुके हैं तो मालवीय भी आलोट में रिकॉर्ड मतों से जीते हैं। इधर, जावरा के पाण्डे के समर्थक भी चाहते हैं कि मंत्री पद मिले।

# पुलिस के हत्थे चढ़े दो चेन स्नेचर

**चेन भी की बरामद, सैलाना से पुलिस को हाथ लगी सफलता**

**मंदसौर, 7 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस।** बीते दिनों शहर के रामटेकरी क्षेत्र में हुई चेन स्नेचिंग के मामले में पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने रतलाम के सैलाना व राजस्थान के बांसवाडा क्षेत्र से दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर चेन बरामद कर ली है।

पुलिस ने बताया कि मामले में शिवम पिता हरिओम जाट उम्र 23 वर्ष निवासी धरियावद जिला प्रतापगढ (राजस्थान) और महेन्द्र पिता धनजी जाति कीर उम्र 24 वर्ष निवासी ग्राम कोटडा बडा तहसील गढी जिला बांसवाडा राजस्थान को गिरफ्तार कर पूछताछ की गई। आरोपियो से पुछताछ कर उनके कब्जे से घटना मे लुटी गई सोने की चैन वजनी 25 ग्राम तथा घटना में प्रयुक्त वाहन बिना नंबर की पल्सर 220 सीसी व एक अवैध देशी पिस्टल मय जिंदा राउंड के जप्त की गई है। आरोपियो से सघन पुछताछ जारी है!

### रामटेकरी कार्नर पर हुई थी वारदात...

बीती 7 नवंबर 2023 को शाम करीब 05.30 बजे रामटेकरी कार्नर परशुराम दरवाजा के पास मुख्य रोड पर दो अज्ञात बदमाशो द्वारा मोटर साईकिल से पैदल बाजार जाने के लिये घर से निकली सरला पति विक्रम सिंह जैन उम्र 65 वर्ष निवासी रामटेकरी रेवास देवडा रोड मंदसौर के गले से सोने की चैन लुटकर भाग गए। इसके बाद पुलिस ने केस दर्ज किया था।

### सीसीटीवी कैमरों की ली मदद...

मंदसौर पुलिस कप्तान अनुराग सुजानिया ने प्रेसवार्ता में बताया कि पुलिस टीम द्वारा घटनास्थल से काले रंग की मोटर साईकिल पर आए अज्ञात बदमाशो की तलाश के लिये आस-पास के लगभग 100 किलो मीटर एरिया के सीसीटीवी कैमरो के फुटैज प्राप्त कर इस पर फोकस किया। जिससे संदेहियो के आने तथा जाने का मार्ग स्पष्टहुआ। बाद संदेहियो की तलाश तथा गिरफ्तारी हेतु सायबर सेल मंदसौर के साथ एक विशेष टीम का गठन किया गया। कडी से कडी जोडकर लगातार आरोपियो की तलाश प्रतापगढ, धरियावद, रतलाम, उदयपुर मे करते हुए संदेहियो को चिन्हित किया जाकर सैलाना जिला रतलाम से अभिरक्षा में लिया गया।

# शिवना नदी में फिर दिखा मगरमच्छ

**मेले के समय पशुपतिनाथ मंदिर के समीप जलीय जीव से खतरा**

**मंदसौर, 7 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस।** तीन दिन पूर्व रामघाट बैराज क्षेत्र में शिवना नदी में मगरमच्छ दिखाई दिया था। वहीं अब एक बार फिर मंदसौर पशुपतिनाथ मंदिर के दूसरे छोर पर मगरमच्छ टीले पर बैठा दिखाई दिया। मगरमच्छ को टीले पर बैठा देख लोग वहां इकट्ठे होने लगे। नदी में कई लोगों ने मगर को देखा। टीले पर बैठे लगभग 4 से 5 फिट के इस मगरमच्छ का वीडियो और फोटो सोश्यल मीडिया पर खूब वायरल हो रहा है। वही मगरमच्छ दिखने से लोगो में डर का माहौल है। लोगों ने वन विभाग से मगर को जल्द पकडने की मांग की है। बतादे की इन दिनों भगवान श्री पशुपतिनाथ महादेव का मेला भी चल रहा है।जिसमे शहर सहित अंचल की जनता भी बडी संख्या में पहुंच रही है।

मंदसौर में शिवना ब्रिज, पशुपतिनाथ मंदिर क्षेत्र और अब रामघाट डेम के समीप शिवना नदी में काफी समय से मगरमच्छ एवं मगरमच्छ के बच्चे देखे जा रहे है। पूर्व में भी छोटी पुलिया के पास मगरमच्छ को देखा गया था। जिसको पकडने के लिए वन विभाग ने पिंजरा भी लगाया था। लेकिन, मगरमच्छ पकड में नहीं आया। अब एक बार फिर शिवना नदी में मगरमच्छ टीले पर बैठा हुआ देखा गया जिससे लोगो में भय का माहोल है। चंदरपुरा क्षेत्र के पार्षद प्रतिनिधि शैलेंद्र गिरी गोस्वामी ने बताया कि वन विभाग को गंभीरता से कार्रवाई करते हुए यहां से मगरमच्छ एवं उनके बच्चों को पकडना चाहिए। क्योंकि, अभी पशुपतिनाथ महादेव का मेला भी लगा हुआ है। जिस कारण से काफी लोग शिवना नदी में स्नान कर रहे हैं एवं झूले चकरी एवं जो व्यापारी आए हुए हैं। उन लोगों के लिए कोई शौचालय की व्यवस्था नहीं होने के कारण वह लोग भी नदी किनारे शौच कर रहे हैं। ऐसे समय किसी बडी घटना की आशंका से इंकार नहीं किया जा सकता है।

## गुरुवार को निकली धूप, दोपहर में पारा बढ़ा

**मंदसौर, 7 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस।** जिले में गुरुवार सुबह से सर्दी में राहत है। दिनभर मौसम साफ रहा और धूप निकली। हालांकि, रात के तापमान में कोई कमी नहीं आई। पिछले दो दिनों में तापमान में 2 डिग्री तक का उछाल आया है। अधिकतम तापमान 24 डिग्री और न्यूनतम तापमान 15 डिग्री के आसपास बना हुआ है।

मौसम जानकारों के अनुसार बंगाल की खाडी से उठा तूफान 'मिचौंग' कमजोर हो रहा है, लेकिन नमी की वजह से प्रदेश में अगले एक-दो दिन तक बादल छाए रहेंगे। हवाओं का रुख उत्तरी होने से सर्दी भी बढेगी। 12 दिसम्बर के आसपास एक और वेस्टर्न डिस्टर्बेंस एक्टिव हो रहा है। इससे तापमान में गिरावट आएगी। सीनियर मौसम वैज्ञानिक एचएस पांडे ने बताया कि हवाओं की दिशा उत्तर-पश्चिमी और उत्तर-पूर्वी होने से सर्दी बढ जाएगी। रात के साथ दिन में भी सर्दी का हल्का असर रहेगा। रात के तापमान में कमी आने की संभावना नहीं है।

## रिटायर्ड टीचर ने बताई ओटीपी, खाते से 99 हजार रुपए कट गए

**शामगढ़, 7 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस।** ऑनलाईन ठगी की वारदात आए दिन हो रही है। इसको लेकर आए दिन जागरूकता की बाते भी की जाती है। लेकिन, फिर भी कई लोग बदमाशों का शिकार बन जाते है। नगर के सेवानिवृत्त शिक्षक द्वारा ओटीपी बताते ही बदमाशों ने उनके खाते से 99 हजार रूपए गायब कर दिए। घटना के बाद बुजुर्ग शिक्षक ने शामगढ थाने में ऑनलाइन ठगी की शिकायत दर्ज कराई है।

शामगढ पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार पंजाबी कॉलोनी में रहने वाले रिटायर्ड शिक्षक देशी कुमार मनोचा उम्र 64 साल से स्टार हेल्थ इंशोरेंस का बीमा प्लान लिया था। उन्हें बीमा पालिसी का कोरियर समय पर नहीं मिला तो 2 दिसंबर को रिटायर्ड शिक्षक ने गूगल पर कोरियर कंपनी का कस्टमर केयर नंबर सर्च किया। इसमें उन्हें 8617376799 नंबर मिला। इस नंबर पर कॉल लगाया तो सामने वाले व्यक्ति ने खुद को कोरियर कंपनी का कस्टमर केयर बताते हुए एक लिंक भेजी, उसे ओपन कर बैंक डिटेल डालकर 5 रुपए का भुगतान करवाया। ठगी की शंका हुई तो शिक्षक ने मोबाइल बंद कर लिया। अगले दिन बैंक स्टेटमेंट निकलवाया तो पता चला कि एसबीआई के बैंक अकाउंट से 98 हजार और 999 के दो ट्रांजेक्शन से 99 हजार की ठगी हो चुकी है। बैंक अधिकारियों ने रिटायर्ड शिक्षक से कहा कि हम बैंक लेवल पर चेक करते हैं। जब कुछ दिनों में राशि नहीं आई तो फरियादी शिक्षक ने शामगढ थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई।

# मंदसौर गौरव दिवस: नवनिर्वाचित विधायक विपीन जैन समर्थक हुए नाराज

## रतलाम के है संपत्ति में सबसे रईस और सबसे कमजोर विधायक

**मंदसौर, 7 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस।** प्रदेश विधान सभा चुनाव के परिणाम घोषित होने के बाद सूबे की 230 विधान सभा सीटों पर मतदाताओं ने अपने विधायको को चुना। एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स की रिपोर्ट कहती है की जनता के पसंदीदा इन एमएलए में 230 नवनिर्वाचित विधायकों में से 205 ऐसे एमएलए हैं, जो करोड़पति हैं। आप भी जानिए एमपी के इन नए विधायकों में करोड़पतियों की सूची में कौन टॉप 3 में है तो किन विधायकों की संपत्ति है सबसे कम...। वैसे सबसे रईस और सबसे कम संपत्ति वाले विधायक पडोसी रतलाम जिले से है।

### ये विधायक हैं करोड़पति टॉप-3...

रतलाम शहर से नवनिर्वाचित बीजेपी विधायक चैतन्य कश्यप 296 करोड़ रुपए की घोषित संपत्ति के साथ इस लिस्ट में टॉप पर हैं। बीजेपी के ही संजय सत्येन्द्र पाठक (विजयराघवगढ़) 242 करोड़ रुपए की प्रॉपर्टी के साथ दूसरे नंबर पर हैं। जबकि, प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कमलनाथ 134 करोड़ रुपए की संपत्ति के साथ सबसे अमीर विधायकों की लिस्ट में तीसरे नंबर पर हैं।

### इनकी है सबसे कम संपत्ति...

रतलाम जिले के सैलाना से विधायक कमलेश डोडियार सबसे कम संपत्ति वाले विधायक हैं। भारत आदिवासी पार्टी के विजयी उम्मीदवार कमलेश डोडियार ऐसे नए विधायक हैं जिन्हें गूदड़ी का लाल कहा जाए, तो गलत नहीं होगा। क्योंकि अकेले वही विधायक ऐसे हैं जो, गरीबी से निकलकर राजनीति में अपनी जगह बनाने में कामयाब हुए हैं। न केवल उनकी संपत्ति सबसे कम है, बल्कि विधायक बनने के लिए उन्हें 12 लाख रुपए का कर्ज लेना पड़ा। कमलेश डोडियार ने 18 लाख रुपए की संपत्ति घोषित की है।

## सोशल मीडिया पर फूट रहा गुस्सा

**मंदसौर, 7 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस।** विधानसभा चुनाव में मंदसौर से भाजपा प्रत्याशी यशपाल सिंह सिसौदिया की हार के बाद समर्थक नाराज होकर आरोप प्रत्यारोप लगा रहे थे तो विधायक विपीन जैन के समर्थक जीत की बधाईयां देकर खुशी बांट रहे थे। लेकिन, मंदसौर गौरव दिवस पर आयोजित कार्यक्रम को लेकर सोशल मीडिया पर विपीन जैन समर्थक नाराज भी नजर आए और निराश भी। मामला था विधायक को कार्यक्रम में आमंत्रित नहीं करने और कार्ड में नाम नहीं होने का। हालांकि दलौदा ग्राम पंचायत के तत्कालीन सरपंच, वर्तमान विधायक विपीन जैन ने भी दलौदा पंचायत द्वारा निर्मित महाराणा प्रताप रिसोर्ट के उद्घाटन कार्यक्रम में तत्कालीन विधायक यशपालसिंह सिसौदिया को आमंत्रित नहीं किया था। अब जब प्रदेश में भाजपा की सरकार है और विधायक विपीन जैन है तो उनके समर्थक यह मांग कर रहे है कि प्रोटोकाल के तहत मंदसौर गौरव कार्यक्रम में विधायक को आमंत्रित किया जाना था।

### यह है मामला...

नपा ने आमंत्रण कार्ड में स्थानीय विधायक का नाम ही नहीं छपवाया। उन्हें आमंत्रित तक नहीं किया गया। ऐसे में नपा प्रशासन पर प्रोटोकॉल उल्लंघन के सवाल खडे हो रहे हैं। पिछले साल मुख्यमंत्री भी कार्यक्रम में आए थे। लेकिन, इस बार सामान्य रूप से गौरव दिवस कार्यक्रम आयोजित किया गया है। इस बार मुख्य अतिथि के रूप में सांसद सुधीर गुप्ता, पूर्व विधायक यशपाल सिंह सिसौदिया, हुडको डायरेक्टर बंशीलाल गुर्जर, बीजेपी उत्तर मंडल अध्यक्ष अरविंद सारस्वत और दक्षिण मंडल अध्यक्ष अजय आसेरी मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हो रहे है।

### ऐसे कैसे होगा मंदसौर का विकास...

मंदसौर विधानसभा में अब विकास कार्य कैसे होंगे। यह गौरव दिवस के कार्ड से ही पता चल सकता है। पुल, पुलियाएं और अन्य विकास कार्य के लिए प्रदेश सरकार राशि स्वीकृत करती है। इसके लिए विधायक डिमांड करता है। चूंकि भाजपा का राज प्रदेश में है। इधर कांग्रेस विधायक अगर विकास कार्य के लिए राशि की मांग करता है तो पहले उन जगहों को तव्वजों दी जाएगी जहां विधायक भाजपा का है। इसके बाद बजट बचता है तो मंदसौर के कांग्रेसी विधायक की डिमांड पूरी की जाएगी। बडे बडे मंत्री और दिग्गज विधायक बजट स्वीकृति अधिक से अधिक अपने क्षेत्र में कराने की कोशिश करेंगे। ऐसे में बजट कितना बचेगा, यह आसानी से अंदाजा लगाया जा सकता है। वैसे ही मप्र सरकार कर्जे में डूबी हुई है।

### इनका कहना...

विधायक को आमंत्रण को लेकर पूछा था तो बताया कि यहां ऐसी परंपरा नहीं है। यहां परिषद किसे बुलाना है यह निर्णय करती है।

**सुधीर कुमार सिंह, सीएमओ, नपा परिषद मंदसौर**

नगरपालिका को शायद यह पता नहीं कि यहां विधायक बदल गया है।

**विपीन जैन, विधायक, मंदसौर**

**दलौदा पंचायत द्वारा निर्मित महाराणा प्रताप रिसोर्ट के उद्घाटन कार्यक्रम में बुलाएं गए अतिथियों के नाम की अनावरण पट्टी, जिसमें तत्कालीन विधायक यशपालसिंह सिसौदिया को आमंत्रित नहीं किया गया था क्योंकि सरकार कांग्रेस की थी और दलौदा के सरपंच विपीन जैन थे।**

विचार-मंथन

# कार्बन उत्सर्जन और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नियम-कायदे

जलवायु संकट का समाधान निकालने के लिए वैश्विक स्तर पर जो भी प्रयास हो रहे हैं, उनमें भारत ने बढ़-चढ़ कर अपनी भूमिका निभाई है। मगर इस क्रम में कई बार बिगड़ते जलवायु का हवाला देकर ऐसे कायदे समान रूप से सभी देशों के लिए जरूरी बनाने की कोशिश की जाती है, जिन्हें प्रथम दृष्टया तो कारगर कहा जा सकता है, मगर दूसरे स्तर पर वे कुछ देशों के लिए मुश्किल या फिर नुकसानदेह भी साबित हो सकते हैं। दुबई में सीओपी28 के जारी सम्मेलन में जलवायु संकट के सवाल पर जो चिंताएं जाहिर की गईं, समस्या के हल के लिए जो लक्ष्य निर्धारित किए गए, भारत ने अपनी सीमा में उन सबसे सहमति जताई है। साथ ही, कार्बन उत्सर्जन को कम करने के क्षेत्र में भारत ने जितनी गंभीरता से काम किया है, उसका भी उल्लेख किया गया। भारत को इस बात की भी चिंता करनी है कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर जो नियम-कायदे तय किए जाते हैं, उन पर अन्य देश भले सहमत हों, लेकिन कोई खास नियम या बिंदु यहां के संदर्भ में कितने उपयुक्त हैं या फिर कहीं उससे देश के सामने कोई नई समस्या तो नहीं खड़ी हो जाएगी! यही वजह है कि भारत ने जलवायु और स्वास्थ्य को लेकर तैयार किए गए सीओपी28 घोषणापत्र पर हस्ताक्षर करने से परहेज किया। खबर के मुताबिक, घोषणापत्र के दस्तावेज में स्वास्थ्य देखभाल के बुनियादी ढांचे के भीतर शीतलन या 'कूलिंग उपकरणों' के लिए ग्रीनहाउस गैसों के उपयोग पर अंकुश लगाने की शर्त थी। दरअसल, कम समय में देश के मौजूदा स्वास्थ्य सेवा बुनियादी ढांचे के मद्देनजर ग्रीनहाउस गैसों के उपयोग को सीमित करने का लक्ष्य हासिल करना भारत के लिहाज से व्यावहारिक नहीं था। घोषणापत्र में ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में गहन, तीव्र और निरंतर कटौती से स्वास्थ्य के लिए लाभ प्राप्त करने के मकसद से जलवायु कार्रवाई का आह्वान किया गया है। इसमें उचित बदलाव, कम वायु प्रदूषण, सक्रिय गतिशीलता और स्वस्थ पोषण शामिल है। यह ध्यान रखने की जरूरत है कि बीते कई दशकों में जलवायु संकट पर जताई जाने वाली चिंता के समांतर तमाम अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों में हल के उपायों पर जोर देने के बावजूद यह समस्या लगातार गहराती गई है। इन हालात के लिए ग्रीनहाउस गैसों या कार्बन उत्सर्जन जैसे कारणों और उसमें विकसित देशों की भूमिका बिल्कुल स्पष्ट रही है। जहां तक भारत का सवाल है, कार्बन उत्सर्जन के मामले में इसने अपेक्षा से ज्यादा तेज रफ्तार से सुधार किया और समय से पहले ही इसमें काफी कमी लाने में कामयाब रहा। दूसरी ओर यह भी हकीकत है कि भारत जैसे कई देशों में अब भी स्वास्थ्य और कुछ अन्य क्षेत्रों में शीतलन की प्रक्रिया एक अनिवार्यता है और इसीलिए घोषणापत्र के इस बिंदु का पूरी तरह अनुपालन करना भारत के लिए मुश्किल है। यों भी, भारत में फिलहाल स्वास्थ्य मामले में बुनियादी सेवाओं की जो तस्वीर है, उसमें अगर शीतलन के लिए ग्रीनहाउस गैस में एक सीमा से ज्यादा कटौती की जाती है, तो उससे चिकित्सा सेवा के क्षेत्र की जरूरतों को पूरा करने में बाधा आ सकती है। भारत में आज भी दूरदराज के कई इलाकों में पर्याप्त स्वास्थ्य सेवाएं नहीं हैं। वहां तक आपात सेवाएं या फिर जीवनरक्षक दवाओं की सुरक्षित पहुंच सुनिश्चित करने के लिए शीतलन एक अनिवार्य पहलू है। इसलिए जलवायु संकट के मसले पर अपने ईमानदार सरोकार के समांतर कुछ बिंदुओं पर भारत की चिंता को समझा जा सकता है।

# मध्य प्रदेश, राजस्थान, छतीसगढ़ के मन में मोदी...

**हरिशंकर व्यास**

सोचें, नरेंद्र मोदी ने शिवराज सिंह, वसुंधरा और रमन सिंह को दरकिनार करके तीनों प्रदेशों में क्यों अपने चेहरे पर चुनाव लड़ा? ताकि प्रादेशिक लड़ाई में प्रादेशिक प्लस-माइनस खत्म हो। प्रायोजित मीडिया नैरेटिव में नरेंद्र मोदी के आगे मोदी बनाम गहलोत, मोदी बनाम कमलनाथ, मोदी बनाम भूपेश बघेल का नैरेटिव बने। कमलनाथ, गहलोत, भूपेश बघेल ने जो कुछ कहा या जिन गारंटियों, रेवड़ियों, ओबीसी के नाम पर वोट मांग रहे हैं वे सब नरेंद्र मोदी के आगे फुस्स हो! ऐसा 2018 के मध्य प्रदेश, राजस्थान, छतीसगढ़ चुनाव में नहीं था। तब विधानसभा चुनाव क्षत्रपों में था। उनमें तब उलटफेर हुई थी मगर 2023 के चुनावों को नरेंद्र मोदी-अमित शाह ने चार महीने बाद होने वाले लोकसभा चुनाव की रिहर्सल बनाया। उन्होंने नतीजों से और जान लिया है कि लोकसभा चुनाव में उत्तर भारत की जमीन पर क्या तो केमेस्ट्री होगी और क्या गणित। गणित और माइक्रो सच्चाई जाहिर है। कमलनाथ (या राहुल गांधी या मल्लिकार्जुन खड़गे या अखिलेश, चंद्रशेखर आजाद, मायावती, हनुमान बेनिवाल आदि) को अपने इस अहंकार का दंड मिल गया है कि 'अखिलेश, वखिलेश को छोड़िए'! कोई न माने इस बात को लेकिन नतीजों के आंकड़े बोलते हुए है कि राजस्थान में कांग्रेस सिर्फ तीन प्रतिशत वोटों से पीछे रही और ऐसा होना अन्य पार्टियों, निर्दलियों को मिले 19 प्रतिशत वोटों से था। मतलब मोदी राज के घोर विरोधी दलित नेता चंद्रशेखर आजाद ने अपनी पार्टी को चुनाव में उतार कर, आदिवासियों की आदिवासी पार्टी ने, बसपा ने तथा कांग्रेस के बागी उम्मीदवारों ने, सचिन पायलट के बिदके गुर्जर वोटों ने कांग्रेस की लुटिया डुबाई। लेकिन ऐसे माइक्रो बंदोबस्तों से जीत-हार का फैसला करवा सकना भी तो मोदी-शाह की वह चुनावी मास्टरी है, जिसके आगे कांग्रेस 2014 से पहले गुजरात में नरेंद्र मोदी से बतौर मुख्यमंत्री भी हारती थी और अब भी हारती है। कांग्रेस और विपक्ष या विपक्ष के 'इंडिया' एलायंस की नंबर एक कमी है कि इन्हें अभी भी समझ नहीं आ रहा है कि मोदी-शाह का जमीनी प्रबंधन क्या होता है? परसेप्शन, सोशल मीडिया के हल्ले और नैरेटिव या निर्दलीय खड़े करके, वोट कटाऊ प्रबंध कर ये कैसे तो अपने को अपरिहार्य, रक्षक, भगवान बनाए हुए हैं और कैसे विरोधी वोट, उसकी ताकत को बिखरा देते हैं! दरअसल विपक्ष ने, खासकर कांग्रेस, उसके नेता और मुख्यमंत्री हमेशा मोदी-शाह को कमतर आंकते हैं। बार-बार हारने के लगातार अनुभव के बावजूद उत्तर भारत का विपक्ष यह समझ नहीं पा रहा है कि मोदी अपने भक्त हिंदुओं के साथ मध्य के अनिश्चित मतदाताओं के वोट भी कैसे मतदान से पहले अपने पक्ष में करवा लेते हैं? हकीकत है राजस्थान और छतीसगढ़ में आंचलिक स्तर पर हिंदू-मुस्लिम था। अलवर हो या जयपुर या सीमा का पोखरण, भीलवाड़ा या नाथद्वार सभी ओर हिंदू-मुस्लिम पॉकेट बने हुए थे तो मेवाड़ की प्रतिष्ठा के चेहरे पर भी चुनाव था। ऐसे नैरेटिव में छतीसगढ़ के रायपुर में लोग एक मुस्लिम मेयर से कांग्रेस के मुस्लिम पार्टी होने की बातें करते हुए थे तो आदिवासी इलाके में ओबीसी मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के आदिवासी विरोधी का परसेप्शन था या शहरी इलाकों में यह हल्ला था कि वे तो गैर-छतीसगढ़ियों के विरोधी। मेरा मानना है भूपेश बघेल ने अपना ओबीसी, किसानपरस्त आधार कायदे से बनाया। लेकिन उन्हें ध्यान नहीं रहा कि बतौर ओबीसी वे नरेंद्र मोदी के ओबीसी होने के परसेप्शन से बड़े अपने ओबीसी होने का हल्ला लोगों में नहीं पैदा सकते है। तभी मेरा यह कहा नोट रखें कि बिहार में नीतीश कुमार, लालू-तेजस्वी का लोकसभा चुनावों में जातीय जनगणना तथा आरक्षण का दांव बुरी तरह फ्लॉप होगा। और नीतीश के मुद्दे में कांग्रेस और राहुल गांधी उत्तर भारत में और दम तोड़ेंगे। मैंने कई दफा लिखा है कि ब्राह्मण-बनिया-राजपूत याकि उत्तर भारत की फॉरवर्ड जातियां भाजपा-संघ परिवार और नरेंद्र मोदी की हवा-आभा के नंबर एक संवाहक-प्रचारक हैं। इसलिए उत्तर भारत में कांग्रेस जब तक फॉरवर्ड में सेंध नहीं लगाएगी, उसका भरोसा नहीं पाएगी तब तक घर-घर की यह चिंता, यह नैरेटिव खत्म नहीं होगा कि मोदी, योगी हैं तभी मुसलमानों से रक्षा है। इस मामले में इस चुनाव में रायपुर का अनुभव मेरे लिए बहुत विचारणीय रहा। सबसे मैंने सुना कि फलां मुस्लिम मेयर को देखो, इसने क्या गदर मचाई है। उसके मुख्यमंत्री के खास बने होने, ज्यादती, मनमानी, वसूली का इतना हल्ला सुना कि लगा मानो पूरा छतीसगढ़ त्रस्त हो। जाहिर है राजधानी शहर के ब्राह्मण-बनियों द्वारा एक तरफ चुपचाप धारणाएं बनवाना वहीं दूसरी और कथावाचकों, पंडितों और पुजारियों से धर्म रक्षा की स्वयंस्फूर्त भावनाएं। कहीं सनातन को खतरा तो कहीं ओबीसी की दादागिरी की चिंता। याद करें मध्य प्रदेश की रिकॉर्ड जीत के पीछे के साल-डेढ़ सालों पर। कथावाचकों, बाबाओं व साधु-संतों से चुनावी जमीन क्या पकी हुई नहीं थी? मध्य प्रदेश के मन में मोदी के आने से पहले क्या बागेश्वरधाम के प्रमुख, कथावाचकों और बाबा लोग मध्य प्रदेश का मन नहीं बनाए हुए थे? मोदी-शाह की क्या इसमें प्लानिंग नहीं रही होगी? कमलनाथ ने इसे कुछ समझा लेकिन यह नहीं माना कि उन्हें नरेंद्र मोदी से मैदान से मुकाबला करना है! कांग्रेस को यह बात तब भी समझनी थी जब चुनाव घोषणा से पहले ही भाजपा ने उम्मीदवारों की पहली लिस्ट जारी की। कांग्रेस की मजबूत सीटों पर सांसदों को चुनाव लड़ाने के ऐलान से ही कमलनाथ, अशोक गहलोत, भूपेश बघेल, एआईसीसी को बूझना था कि इसका अर्थ तो मोदी-शाह पूरा दम लगाने वाले हैं। मगर कमलनाथ-दिग्विजय सिंह इस विश्वास में थे कि उन्होंने सर्वेयर टीमों से ठोक-बजा कर उम्मीदवार चुने हैं। शिवराज सिंह के खिलाफ माहौल है, लोग बदलाव चाहते हैं। हम ज्यादा रेवड़ियों का घोषणापत्र बनाएंगे तो चुनाव जीत जाएंगे और पहली लिस्ट से प्रदेश भाजपा में कंफ्यूजन बना है तो इससे भी कांग्रेस को फायदा! जाहिर है कांग्रेस के दो मुख्यमंत्रियों और दो पूर्व मुख्यमंत्रियों ने और पार्टी ने रुटिन में, एक ही अंदाज में चुनाव लड़ा। भाजपा की नकल करते हुए, कर्नाटक से प्रेरित हो कर इन्होंने चुनाव प्रबंधन और सर्वे की प्राइवेट कंपनियों को हायर किया। ब्लॉक, जिला, प्रदेश संगठन की बजाय इन सर्वे रिपोर्टों से अपने उम्मीदवार तय किए या कैंपेन बनवाया। मतलब कांग्रेस में कोई यह अंतर नहीं कर पाया कि मोदी-शाह टीम आर-पार की लड़ाई बना रही है तो पहले तो विपक्ष की अन्य पार्टियों को साथ ले कर मोर्चा बनाएं।

# निजता पर भारी आर्टिफिशियल इंटैलीजैंस

**दीपिका अरोड़ा**

आर्टिफिशियल इंटैलीजैंस (ए.आई.) जिसे कृत्रिम मेधा भी कहते हैं, को तकनीकी क्रांति की सर्वोत्तम उपलब्धि माना जा रहा है। इसके आगमन ने न केवल इंटरनेट यूजर्स का कार्य अत्यन्त सरल बना दिया है अपितु स्वास्थ्य, पत्रकारिता, फिल्म उद्योग, शिक्षा आदि विविध क्षेत्रों में भी यह बहुपयोगी सिद्ध हो रही है। बोलने में असमर्थ व्यक्ति के विचार डीपफेक के माध्यम से आवाज पा सकते हैं, इसे आधुनिक तकनीक का ही करिश्मा कहेंगे। शिक्षा क्षेत्र में जटिल समझे जाने वाले विषयों को रोचक स्वरूप प्रदान करना डीपफेक के लिए मानो बाएं हाथ का खेल है। विज्ञापन के क्षेत्र में तो इससे जुड़ी अपार संभावनाएं मौजूद हैं। जैसे कि हर तस्वीर के दो पहलू होते हैं, विकसित भविष्य के लिए वरदान बनता डीपफेक अपने नकारात्मक रूप में बहुरूपिया बनकर लोगों की निजता से खिलवाड़ कर रहा है। हाल ही में डीपफेक के शिकार बने कलाकार चर्चा का केंद्र रहे। वैश्विक स्तर पर अमरीका के पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा तथा मेटा के मुखिया मार्क जुकरबर्ग जैसी नामचीन हस्तियां भी ए.आई.अय्यारी का निशाना बनने से नहीं बच पाईं। साधारण शब्दों में, डीपफेक ए.आई. की सहायता से तैयार किया गया कंटैंट है जिसमें ऑडियो-वीडियो दोनों ही शामिल होते हैं। तस्वीर अथवा वीडियो में मौजूद व्यक्ति के चेहरे पर अन्य चेहरा लगाकर, ए.आई. की मदद से उसके बॉडी मूवमैंट, हाव-भाव इस प्रकार बदल दिए जाते हैं कि देखने पर यह बिल्कुल असली लगती है। केवल सजग एवं प्रशिक्षित आंखें ही इसकी वास्तविकता भांप पाती हैं। एक तरह के डीपफेक कंटैंट में असली आवाज की कॉपी करके, अलग-अलग तरह के स्कैम अंजाम दिए जाते हैं। प्रतिवर्ष बड़ी संख्या में प्रसारित होने वाले डीपफेक वीडियो न केवल व्यक्ति विशेष की छवि धूमिल करने का पर्याय बनते हैं अपितु कंटेंट के नाम पर अक्सर ऐसी सामग्री भी परोसते रहते हैं, जो समाज में अनैतिकता फैलाने अथवा धार्मिक-साम्प्रदायिक आग भड़काने का कार्य करे। दलगत भावनाओं के चलते राजनीतिक दुष्प्रचार करना आम बात है। सहज सॉफ्टवेयर उपलब्धता के कारण डीपफेक मोबाइल तक अपनी बढ़त बना चुका है। साइबर अपराधियों को पकड़ना कठिन है, इसी बात का वे अनुचित लाभ उठाते हैं। वर्ष 2022 में 66% साइबर सुरक्षा पेशेवरों ने डीपफेक हमलों का सामना किया, डीपफेक धोखाधड़ी से विश्व भर की कंपनियों को 4.8 डॉलर की क्षति उठानी पड़ी। शोधकर्ताओं के अनुसार, मौजूदा दशक के अंत तक 90% कंटैंट सिंथेटिक विधि से तैयार किए जा सकते हैं। मशीन लर्निंग एवं ए.आई. आगामी वर्षों में इतने परिपक्व होने की संभावना है कि फॉरेंसिक साइंस की मदद के बिना सच-झूठ को भेदना दुष्कर होगा। खास अथवा आम, किसी भी व्यक्ति की निजता से छेड़छाड़ कानूनन अवैध है। सूचना प्रौद्योगिकी (आई.टी.) नियम, 2021 के तहत, गलत सूचना प्रसारित होने से रोकना ऑनलाइन प्लेटफॉर्म का कानूनी दायित्व है। नियमानुसार, यूजर्स अथवा सरकार से रिपोर्ट प्राप्त होने पर 36 घंटे के भीतर संबंधित कंटैंट को हटाना अनिवार्य है। ऐसा न होने पर शिकायतकर्ता कंपनी के विरुद्ध कोर्ट में मुकदमा दर्ज करवा सकता है। यूनीक फीचर्स प्रयुक्त करके डीपफेक बनाना आई.टी. एक्ट की धारा 66-सी तथा ऑनलाइन चैटिंग में इसका प्रयोग करना धारा 66-डी के अंतर्गत आपराधिकश्रेणी में आते हैं। इलैक्ट्रानिक रिकार्ड की जालसाजी के अंतर्गत आने के कारण डीपफेक पर आई.पी.सी. की धारा 463 से 471 लागू की जा सकती है। फर्जी ऑडियो-वीडियो सोशल मीडिया पर अपना वर्चस्व बना पाने में कामयाब हो पाते हैं क्योंकि इन पर रोक लगाने संबंधी अभी तक न तो कोई संतोषप्रद कानून मौजूद है और न ही सोशल प्लेटफॉर्म पर प्रसारित होने वाले कंटैंट की निगरानी एवं जांच के लिए कोई जवाबदेह नियामक संस्था ही। हाल ही में स्वयं प्रधानमंत्री महोदय द्वारा चिंता जताने के उपरांत जल्द ही मौजूदा कानून संशोधित होने अथवा कठोर कानून लागू होने की संभावनाएं बनी तो हैं। तकनीकी विकास का उद्देश्य हमेशा मानव जीवन को बेहतर बनाना ही रहा है। कृत्रिम मेधा प्रत्येक प्रकार से इस विकासक्रम में अद्भुत सिद्ध हो सकती है बशर्ते न तो वह मानवता पर हावी होने पाए और न ही किसी भी रूप में उसका दुरुपयोग संभव हो।

# अगले आम चुनाव और हिन्दी पट्टी का यह जनादेश

हिन्दी हृदय प्रदेश के तीन राज्यों में भाजपा की जीत के कई संदेश हैं। पहला यह कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी आजाद भारत के इतिहास में पहले ऐसे सार्वदेशिक नेता के तौर पर स्थापित हो चुके हैं, जिनकी लोकप्रियता समय के साथ बढ़ी है। वे अकेले अपने दम पर चुनाव जिताने की क्षमता रखते हैं। राजस्थान से चर्चा शुरू करते हैं। वहां इस बार वसुंधरा राजे सिंधिया को मुख्यमंत्री के चेहरे के तौर पर पेश नहीं किया गया था। राजनीतिक विश्लेषकों की मान्यता थी कि यह फैसला नुकसान देह साबित हो सकता है। इसके साथ ही भगवादल कई गुटों में विभक्त था। मध्य प्रदेश और छत्तीसगढ़ के हालात भी उससे जुदा नहीं थे। मध्य प्रदेश में शिवराज सिंह चौहान थोड़े व्यवधान के साथ लगभग 17 वर्ष से हुकूमत कर रहे हैं। चुनाव के दौरान कोई उनकी बुराई करता नहीं दिखता था और उनका काम भी दिखता था लेकिन राजनीति में 'फटीक फैक्टर' का अपना महत्व होता है। खुद भारतीय जनता पार्टी के कुछ कद्दावर नेता उड़ा रहे थे कि 'मामा' अब बिकाऊ नहीं थकाऊ चेहरा हैं। यही वजह है कि मुख्यमंत्री होने के बावजूद पार्टी ने उनके बजाय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नाम और सरकार के काम पर चुनाव लड़ने का फैसला किया। इसके साथ केन्द्रीय राजनीति में सक्रिय बड़े नामों को भी मैदान में उतार दिया गया था। लगता था कि भाजपा एक हारी हुई लड़ाई जीतने का प्रयास कर रही है परंतु शिवराज सिंह न रुके, न थके। उन्होंने कुछ महीने पहले लाडली बहना योजना की शुरुआत की। महिलाओं के सशक्तीकरण के मामले में उनकी सरकार पहले से ही अच्छा काम करती रही थी और उनके सहारे वे चुनावी वैतरणी में कूद पड़े।प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने भी वहां अपनी शख्सियत को पूरी तरह चुनावी प्रचार के केन्द्र में ला खड़ा किया था। यह जोखिम भरा दांव था पर वह खिलाड़ी क्या, जो खतरे से खेलना न जानता हो। नतीजा सामने है। ओडिशा के अलावा किसी अन्य प्रदेश में कोई सत्तारूढ़ दल सिर्फ अपने बल-बूते पर इतनी बड़ी जीत हासिल करने वाला साबित नहीं हो सका है। छत्तीसगढ़ का उदाहरण भी कम गौरतलब नहीं।लगभग सभी एग्जिट पोल कह रहे थे कि भूपेश बघेल की दोबारा ताजपोशी होने जा रही है। इसके आसार भी नजर आ रहे थे क्योंकि भारतीय जनता पार्टी में रमन सिंह के अलावा बड़े चेहरों का अभाव था। रमन सिंह की अगुवाई में ही पिछले चुनाव में पार्टी परास्त हुई थी। बघेल ने बड़ी समझदारी से महिलाओं पिछड़ों और वंचितों के लिए काम करने के अलावा 'छत्तीसगढ़िया सबले बढ़िया' जैसे स्थानीय भावनाओं को गुदगुदाने वाले नारे भी गढ़े थे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आकर्षण के आगे सारी किलेबंदी तबाह हो गई। यहां भारतीय जनता पार्टी के संगठन और रणनीति की भी चर्चा की जानी चाहिए। गृहमंत्री अमित शाह एक बार फिर सियासत के चाणक्य साबित हुए हैं और राष्ट्रीय अध्यक्ष जय प्रकाश नड्डा की सरल सूझबूझ लोकसभा चुनाव से ठीक पहले के इस मतदान में पूरी तरह कारगर रही है।इस त्रयी पर 2024 की बड़ी जिम्मेदारी है। कर्नाटक के बाद तेलंगाना जीतकर कांग्रेस ने साबित कर दिया है कि वह फिर से दक्षिण की पहली पसंद बन चुकी है। अतीत में भी दो बार दक्षिण ने ही उसकी वापसी कराई थी। हैदराबाद की जीत इसलिए भी मायने रखती है क्योंकि यहां कांग्रेस का टकराव भारत राष्ट्र समिति जैसे मजबूत क्षेत्रीय दल से था। के.चंद्रशेखर राव पिछले दस साल से हुकूमत में हैं और कल्याणकारी योजनाओं के मामले में वे किसी से कम नहीं। उनकी हार क्या बयान करती है? भारत शायद दो दलीय चुनावी व्यवस्था की ओर बढ़ रहा है।




## आज का राशिफल

मेष [illegible]

वृषभ [illegible]

मिथुन [illegible]

कर्क [illegible]

सिंह [illegible]

कन्या [illegible]

तुला [illegible]

वृश्चिक [illegible]

धनु [illegible]

मकर [illegible]

कुंभ [illegible]

मीन [illegible]

## सुडोकू पहेली क्रमांक- 5078

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | 5 | | | | 4 | | 6 | |
| 3 | | | | 6 | 8 | 2 | | |
| 4 | 6 | | | 9 | | | | 1 |
| | | | | | 1 | | 4 | |
| | 3 | 4 | | 5 | | 7 | 2 | |
| | 9 | | 2 | | | | | |
| 6 | | | | 8 | | | 7 | 9 |
| | | 9 | 3 | 2 | | | | 8 |
| | 7 | | 9 | | | | 5 | |

नियम : प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक अंक भरे जाने आवश्यक हैं, इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है। आड़ी व खड़ी पंक्ति में एवं 3x3 के वर्ग में अंक की पुनरावृत्ति न हो, पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते।

## सुडोकू पहेली क्र. 5077

| | | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 3 | 2 | 6 | 8 | 4 | 5 | 1 | 7 | 9 |
| 4 | 8 | 7 | 6 | 1 | 9 | 5 | 2 | 3 |
| 9 | 1 | 5 | 7 | 2 | 3 | 6 | 8 | 4 |
| 7 | 9 | 2 | 5 | 6 | 8 | 4 | 3 | 1 |
| 6 | 4 | 8 | 3 | 9 | 1 | 7 | 5 | 2 |
| 1 | 5 | 3 | 4 | 7 | 2 | 8 | 9 | 6 |
| 2 | 6 | 1 | 9 | 5 | 7 | 3 | 4 | 8 |
| 8 | 7 | 4 | 2 | 3 | 6 | 9 | 1 | 5 |
| 5 | 3 | 9 | 1 | 8 | 4 | 2 | 6 | 7 |

## वर्ग पहेली 5078



संकेत: बाएं से दाएं

1. 1 जून 1975 को भारत की महिला भारोत्तोलक का जन्मदिवस है ये 2000 के सिडनी ओलम्पिक खेलों में कांस्य पदक जीतने वाली प्रथम महिला खिलाड़ी है (7)
6. [illegible] (2)
7. प्रेमी, साजन, बालमा (3)
9. यह भारत देश की प्रचलित मुद्रा है (3)
10. [illegible] (3)
11. खत, कागज, चिट्ठी (2)
13. लेखा पुस्तक, रजिस्टर (2)
14. रामचरितमानस का एक भाग जिसमें श्रीराम के बचपन काल का विवरण है (4)
16. राजा जनक के नामों में एक (5)
17. कोमल काया, सुंदर स्त्री (2)
19. मिलना, संयोग (2)
20. [illegible] (2)
21. [illegible] (1)
22. सैनिक, मिलिटरीमैन (2)

ऊपर से नीचे

1. कुंतीपुत्र जो कन्याकाल में सूर्य के अंश से उत्पन्न हुआ था, इसी से इसे कानीन कहते हैं, कान शरीर का एक संवेदी अंग (2)
2. इसे अंग्रेजी में कैरीट पेपर कहते हैं (4)
3. यह मलेशिया देश का पुराना नाम है (3)
4. सांस लेने व छोड़ने की एक जैविक क्रिया (3)
5. कारण (अंग्रेजी)(3)
8. गंभीर ध्वनि करना, बजाना (3)
9. अनाकर्षकता, आकर्षणहीनता, असौम्यता, असुंदरता (5)
12. जल में उत्पन्न वस्तु (3)
13. ध्वनि या नाद उत्पन्न होना (3)
14. [illegible] (3)
15. यह धौलाधार पर्वत श्रृंखलाओं के मध्य स्थित एक पर्यटक स्थल है यह स्थल हिमाचल प्रदेश के चंबा जिले का हिस्सा है (4)
18. [illegible] (2)

### वर्ग पहेली 5077 का हल

| | | | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| नू | र | ज | हा | ■ | सा | कै | ल |
| ल | ह | न | का | ■ | हि | सा | ल |
| न | म | न | ■ | गु | र | ■ | ब |
| ■ | दि | ■ | स | त | लु | ज | ■ |
| गो | ल | मा | ल | ■ | धि | ■ | बो |
| पी | ■ | मा | फ | ■ | या | ज | क |
| ना | ज | ■ | ■ | ■ | न | मी | ■ |
| थ | ल | च | र | ■ | वी | र | ता |

# सशस्त्र सेना झण्डा दिवस पर सैनिक कल्याण के लिए स्वैच्छिक सहयोग को उमड़े लोग

**देश भक्ति के गीतों से गूंज उठा नीमच शहर, कलेक्टर जैन के नेतृत्व में सशस्त्र सेना झण्डा दिवस पर नीमच में वृहद रैली सम्पन्न**

**नीमच, 7 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस।** सशस्त्र सेना झण्डा दिवस पर सैनिको के कल्याण के लिए आर्थिक सहयोग राशि एकत्रित करने के लिए कलेक्टर श्री दिनेश जैन के नेतृत्व में गुरूवार को नीमच में वृहद रैली आयोजित की गई। इस रैली में कलेक्टर श्री दिनेश जैन, एडीएम सुश्री नेहा मीना, जिला पंचायत सीईओ श्री गुरूप्रसाद, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री नवलसिंह सिसौदिया, संयुक्त कलेक्टर श्री राजेश शाह, सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी-कर्मचारी, भूतपूर्व सैनिक, जिला सैनिक कल्याण के अधिकारी श्री संजय दीक्षित, न.पा.अध्यक्ष श्रीमती स्वा,ति चौपडा एवं पार्षदगणों सहित विभिन्न कॉलोजों, विद्यालयों के छात्र-छात्राओं, एनसीसी, एनएसएस, स्काउट के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक रैली में शामिल होकर विभिन्नो स्वंय सेवी संस्थाओं, सामाजिक संगठनों, संघो से सैनिक कल्याण के लिए स्वैच्छिक सहयोग राशि प्राप्त की।

कलेक्टर श्री दिनेश जैन, एडीएम सुश्री नेहा मीना ने झण्डा दिखाकर डाक बंगला चौराहे से रैली का शुभारम्भ किया। यहां केमिस्टन ऐशोसिएशन नीमच द्वारा सैनिक कल्याण के लिए कलेक्टर को स्वैच्छा से सहयोग राशि भेंट की गई। कलेक्टर श्री जैन ने इस वृहद रैली के साथ डाक बंगले से गुप्ता नर्सिंग होम, मैशी शो-रूम चौराहा, स्वर्णकार चौराहा, जिला न्यायालय, बस स्ट्रेण्ड , फव्वारा चौक, बोहरा पेट्रोल पम्पम, बारादरी, भोजू चौराहा, घंटाघर, बोहरा गली कार्नर, ज्ञान मंदिर के सामने होते हुए चौपडा गणेश मंदिर, नगर पालिका, विजय टॉकीज, होते हुए, भारत माता चौराहा पहुंचकर इस वृहद रैली का समापन हुआ। रैली के दौरान कलेक्टर श्री दिनेश जैन,एडीएम सुश्री नेहा मीना, जिला पंचायत सीईओ श्री गुरूप्रसाद, ने विभिन्न स्वंय सेवी संस्थाओ, सामाजिक संगठनों, और आमजनों, दान-दाताओं को सशस्त्र सेना झण्डा दिवस के ध्वज लगाकर, सैनिक कल्याण कोष के लिए सहयोग राशि प्राप्त की। रैली के दौरान हेल्पिंग हेण्ड, मेडिकल ऐसोसिएशन, जैन सोशल ग्रुप, पुलिस परिवार, फल एवं सब्जी व्यापारी संगठन, जिला अधिवक्ता संघ, ऑटो मोबाईल संघ, होटल व्यवसायी संघ, आवास इन्फोटेक नीमच, लकडी व्यापारी संघ, वस्त्रव व्यापारी संघ, सर्राफा बाजार व्यापारी संघ, बोहरा समाज, मिठाई व्यापारी संघ, मण्डी व्यवसायी संघ, इनरव्हील क्लब, नाकोड मित्र मण्डल, श्री संतोष चौपडा मित्र मण्डल, सहित अनेक सामाजिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने रैली में शामिल कलेक्टर श्री दिनेश जैन,एडीएम सुश्री नेहा मीना, जिला पंचायत सीईओ श्री गुरूप्रसाद का स्वागत कर संगठनों के पदाधिकारियों से सैनिक कल्याण कोष के लिए सहयोग राशि प्राप्त कर उन्हे सहयोग के लिए धन्यवाद दिया। इस वृहद रैली में एसडीएम डॉ.ममता खेडे, डिप्टी कलेक्टर सुश्री किरण आंजना सहित विभिन्न विभागों के अधिकारी-कर्मचारी, जनप्रतिनिधि, गणमान्य नागरिक, भूतपूर्व सैनिक, पत्रकारगण, शिक्षकगण सहित विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारी एवं छात्र-छात्राओं ने भाग लिया।

# नपा परिषद द्वारा गौरव दिवस पर सौधनी विजय स्तंभ पर दीप जलाये

**मंदसौर, 7 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस।** नगर पालिका परिषद मंदसौर के द्वारा गौरव दिवस के उपलक्ष्य में दो दिवसीय कार्यक्रमो का आयोजन किया जा रहा है । गुरूवार को मंदसौर गौरव दिवस के अंतर्गत प्रथम दिवस ग्राम सौधनी स्थित सम्राट यशोधर्मन की विजय गाथा बताने वाले विजय स्तंभ पर नगर पालिका परिषद मंदसौर के जनप्रतिधियो ने पहुॅचकर दिप जलाये। नपाध्यक्ष श्रीमती रमादेवी बंशीलाल गुर्जर की परिषद ने गत वर्ष मंदसौर नगर का गौरव दिवस मनाने की शुरूआत की थी। इसी परम्परा को कायम रखते हुए नपा परिषद के द्वारा इस वर्ष भी गौरव दिवस अंतर्गत कार्यक्रमो का आयोजन नपा के द्वारा किया जा रहा है। कार्यक्रमो का शुभारंभ ग्राम सौधनी स्थित विजय स्तंभ से की गयी। नपाध्यक्ष श्रीमती रमादेवी बंशीलाल गुर्जर ने सौधनी के विजय स्तंभ के सम्मुख दिप जलाये उनके साथ नपा उपाध्यक्ष श्रीमती नम्रता प्रितेश चावला, भाजपा उत्तर मण्डल अध्यक्ष अरविन्द्र सारस्वत, नपा सभापतिगण श्रीमती निर्मला चंदवानी, निलेश जैन, रमेश ग्वाला, कौशाल्य बंधवार, दिपमाला रामेश्वर मकवाना, पूर्व नपाध्यक्ष राम कोटवानी, रेडक्रास सोसायटी चेयरमेन प्रितेश चावला, शा महाविघालय जनभागीदारी समिति अध्यक्ष नरेश चंदवानी, भाजपा खेल प्रकोष्ठ जिला संयोजक विनय दुबेला, महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष श्रीमती निर्मला गुप्ता, जिला उपाध्यक्ष राजेश नामदेव, प्रीति रोखले, पार्षदगण ईश्वरसिंह चौहान एडव्होकेट, सुनिल बसंल, दिपक गाजवा, सुनिता नंदलाल गुजरिया, सुनिता भावसार, गरिमा भाटी, पिकी दुबेला, भावना पमनानी, मंजु मालवीय, प्रमिला संजय गोयल, अनिल मालवीय, श्रीमती विघा कडोतिया, माया भावसार, ने भी विजय स्तंभ के सम्मुख दिप जलाये। इस अवसर पर कन्हैयालाल सोनगरा, राजेश गुर्जर,, बंशी राठौर, अर्जुन धनगर भी साथ थे।

# सैनिकों के कल्याण के लिए आर्थिक सहयोग के प्रति जिले में उत्साह

**उपखण्ड जावद की ओर से भेंट की 10 लाख 10 हजार रूपये की सहयोग राशि**

**नीमच, 7 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस।** सशस्त्र सेना झंडा दिवस पर सैनिको एवं उनके आश्रितों के कल्याण के लिए कलेक्टर श्री दिनेश जैन के आव्हान पर जिले के नागरिको, अधिकारी-कर्मचारियों एवं विभिन्न स्वयंसेवी संगठनो, सामाजिक संगठनों, व्यवसाईयों में आर्थिक सहयोग के प्रति अपार उत्साह देखने को मिल रहा है।

इसी क्रम में गुरूवार को एसडीएम जावद श्री राजकुमार हलदर ने उपखण्ड जावद की और से सैनिक कल्य्ण कोष के लिए कलेक्ट र श्री दिनेश जैन से भेट कर उन्हे 10 लाख 10 हजार रूपए की सहयोग राशि जमा करवाई है। इसमें तहसील सिगोंली, जावद,टप्पो रतनगढ एवं मेारवन द्वारा सग्रहित की गई 25-25 हजार रूपये की सहयोग राशि भी शामिल है। इस मौके पर डिप्टीव कलेक्टरर सुश्री किरण आंजना, एसडीएम श्री राजकुमार हलदर एवं जावद क्षेत्र के सभी तहसीलदार एवं नायब तहसीलदार उपस्थित थे।

**आदिम जाति कल्यायण विभाग ने भेंट किए सहयोग राशि :-** सशस्त्र सेना झण्डा दिवस पर सैनिकों के कल्याण के लिए आर्थिक सहयोग का सिलसिला निरंतर जारी है। गुरूवार को आदिम जाति कल्याण विभाग के जिला संयोजक श्री राकेश कुमार राठौर ने अपने स्टाफ की ओर से 2 लाख 31 हजार 731 रूपये की राशि सैनिक कल्याण कोष में जमा करवाई है। श्री राठौर ने गुरूवार को कलेक्टर से भेंट कर सहयोग राशि जमा पर्ची एवं सूची कलेक्टर को भेंट की।

## आज मंदसौर नगर गौरव दिवस पर भगवान श्री पशुपतिनाथ की महाआरती होगी

**मंदसौर, 7 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस।** नपाध्यक्ष श्रीमती रमादेवी बंशीलाल गुर्जर, उपाध्यक्ष श्रीमती नम्रता प्रितेश चावला, सीएमओ श्री सुधीर कुमार सिंह ने बताया कि मंदसौर नगर पालिका परिषद के द्वारा दिनांक 8 दिसम्बर शुक्रवार को मंदसौर नगर का गौरव दिवस मनाया जायेगा । दिनांक 8 दिसम्बर शुक्रवार को नगर पालिका परिषद परिवार के द्वारा भगवान पशुपतिनाथ महादेव की महाआरती का आयोजन सांय 6 बजे होगा। इसके बाद सांय 7 बजे पशुपतिनाथ मंदिर के समीप शिवना तट छोटी पुलिया पर भव्य आतिबाजी की जायेगी इन दोनो कार्यक्रमो में सांसद श्री सुधीर गुप्ता, पूर्व विधायक श्री यशपालसिंह सिसौदिया, हुडको के डायरेक्टर श्री बंशीलाल गुर्जर, भाजपा जिलाध्यक्ष श्री नानालाल अटोलिया, भाजपा उत्तर मण्डल अध्यक्ष श्री अरविन्द्र सारस्वत, भाजपा दक्षिण मण्डल अध्यक्ष अजय आसेरी मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होगे। नगर के गणमान्य नागरिको से नपा परिषद आग्रह करती है कि वे मंदसौर नगर दिवस के गौरव दिवस समारोह में शामिल होवे व कार्यकम की गरिमा बढावे।

## पुरानी रंजिश को लेकर मारपीट, क्रास प्रकरण दर्ज

**पिपलियामंडी, 7 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस।** पुरानी रंजिश को लेकर मारपीट के मामले में पुलिस ने दोनों पक्षों के खिलाफ क्रास प्रकरण दर्ज किया। दुर्गा चोक निवासी शाहरुख ने शिकायत दर्ज कराई कि आशिक खान ने पुरानी रंजिश को लेकर गाली-गलौज की व मारपीट की। इसी तरह नई आबादी कयामपुर गली निवासी आशिक खान ने पिपलिया पुलिस चोकी पर शिकायत दर्ज कराई कि मैं रात्रि में अलाव ताप रहा था, इसी दौरान शाहरुख खान आया और गाली-गलौज कर बोला आज पुराने हिसाब का बदला लूंगा, कहकर गाली-गलौज की व मारपीट की। पुलिस ने दोनों आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज किया।

## खूटली से 2 भाईयों को पीटा, केस दर्ज

**पिपलियामंडी, 7 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस।** खेत की मेड के पत्थर हटाने का विरोध किया तो दो भाईयों के साथ खूटली से मारपीट की। पुलिस ने केस दर्ज किया। लसुडिया राठौर निवासी जगदीश मोगिया ने पिपलिया चोकी पर शिकायत दर्ज कराई कि सागरमल पिता प्रभुलाल मोगिया बैलागाडी से जा रहा था। इससे मेरी खेत की मेड के पत्थर गिर गए, मैंने सागरमल से पत्थर हटाने का विरोध किया व एसा करने से मना किया तो सागरमल ने गाली-गलौज की व बैलगाडी की खूटली से मेरे व मेरे भाई दिनेश को मारी, जिससे चोंटे आई। पुलिस ने आरोपी सागरमल के खिलाफ के केस दर्ज किया।

**निर्वाचित विधायक को गौरव दिवस कार्यक्रम में नहीं बुलाना लोकतांत्रिक मर्यादाओं का उल्लंघन...**

# कांग्रेस पार्षदों ने सीएमओ से मिलकर जताई आपत्ति

**मंदसौर, 7 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस।** नपा प्रतिपक्ष रफत पयामी के नेतृत्व में कांग्रेस पार्षद दल ने गुरुवार को मुख्य नगरपालिका अधिकारी से मिलकर निर्वाचित विधायक श्री विपिन जैन को मन्दसौर गौरव दिवस में आमंत्रित नहीं करने आपत्ति दर्ज कराई तथा ज्ञापन देकर कहा कि समस्त कांग्रेस पार्षद गौरव दिवस कार्यक्रम का बहिष्कार करेंगे। इस अवसर पर पार्षद पिंकी सोनी, कमरूनिशा अंसारी, तबस्सुम अंसारी, प्रीतम पंचोली, पार्षद प्रतिनिधि कमलेश सोनी लाल और आरिफ अंसारी उपस्थित रहे।

ज्ञापन में कहा कि मन्दसौर नगरपालिका परिषद द्वारा मन्दसौर गौरव दिवस मनाया जा रहा है जिसके विधिवत आमंत्रण पत्र मुख्य नगरपालिका अधिकारी के नाम से वितरित किये गये है। चुकी आप शासन के प्रतिनिधि है और यह आयोजन सरकारी स्तर का है। इस शासकीय स्तर के आयोजन में मन्दसौर के निर्वाचित लोकतांत्रिक पद्धति से चुने हुवे विधायक श्री विपिन जैन को इस कार्यक्रम में बतौर अतिथि आमंत्रित नहीं किया गया है। आप शासन के प्रतिनिधि है इसलिये आपका यह दायित्व है कि चुने हुए विधायक को सरकारी आयोजनों में बुलाये। आपके इस कृत्य का हम समस्त पार्षद विरोध करते है। इसको तुरन्त सुधारा जावे नये आमंत्रण पत्र छपाये जाकर सह सम्मान विधायक श्री विपीन जैन को आमंत्रित किया जावें जिससे की लोकतांत्रिक मर्यादाओ का निर्वहन हो। अगर ऐसा नहीं किया गया तो हम समस्त कांग्रेस पार्षद नगरपालिका द्वारा आयोजित इस गौरव दिवस का बहिष्कार करेगें।

**गौरव दिवस के आयोजन में विधायक जी को न बुलाना नपा का दुर्भावनापूर्ण कार्य,मुख्य सचिव को शिकायत की -** नगर पालिका द्वारा गौरव दिवस के आयोजन में मंदसौर विधायक माननीय विपिन जी जैन को नहीं बुलाने पर शहर कांग्रेस अध्यक्ष डॉ राघवेंद्र सिंह तोमर ने मध्य प्रदेश के मुख्य सचिव को पत्र लिखकर कार्रवाई की मांग की है। पत्र की एक कॉपी कलेक्टर मंदसौर को भी भेजी है। डॉ राघवेंद्र सिंह तोमर ने बताया कि माननीय विधायक के विशेषाधिकार हनन किया गया है,एक निर्वाचित जनप्रतिनिधि को नगर पालिका द्वारा सरकारी कार्यक्रम में नहीं बुलाना घोर निन्दनीय है।

## चाकू से हमला करने के दो आरोपियों को पांच-पांच वर्ष का सश्रम कारावास

**रतलाम, 7 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस।** 70 हजार रुपए के लिए चाकू मारकर घटना करने के दो आरोपियों को न्यायालय द्वितीय अपर सत्र न्यायाधीश अरुण कुमार खरादी ने विभिन्न धाराओं में पांच-पांच वर्ष के सश्रम कारावास एवं 6000/-6000/- रुपए के अर्थ दंड की सजा सुनाई। अपर लोक अभियोजक सतीश त्रिपाठी ने बताया कि घटना 9 फरवरी 2017 की रात्रि 8:00 बजे की है। फरियादी रियाज उर्फ माना पिता अब्दुल रउफ खान निवासी शैरानीपुरा रतलाम ने पुलिस थाना माणक चौक में रिपोर्ट लिखवाई कि उसके चाचा द्वारा उसे ?70000 विजय पांडे को देने हेतु भेजा गया था। वह रुपए देने जा रहा था। उसी समय रास्ते में उसे दोस्त आरोपी जावेद उर्फ बारीक पिता लाल मोहम्मद निवासी कुंजडो का वास ने फोन कर नाहर कन्वेंट स्कूल के पीछे मैदान पर थोडी देर के लिए बुलाया था। वह वहां पहुंचा तो अन्य आरोपी अमजद उर्फ डकैत पिता मोहम्मद रफीक निवासी घास बाजार दोनों कार में बैठकर शराब पी रहे थे। उन्होंने जुंए के रुपए की मांग की। रुपए नहीं देने पर अश्लील गालियां देते हुए दोनों आरोपी ने चाकू से पेट पर हमला किया। जिससे वह घायल हो गया। बाद में वह ऑटो में बैठकर विजय पांडे के पास गया। जहां से उसे सरकारी अस्पताल ले गए। जहां उसने देखा तो उसके 70000/- रुपए उसकी जेब में नहीं मिले। पुलिस थाना माणक चौक ने मामले की विवेचना कर चालान प्रस्तुत किया। जहां न्यायालय ने दोनों आरोपियों को धारा 307 भा.द.वि. में पांच-पांच वर्ष के सश्रम कारावास तथा धारा 25 आयुध अधिनियम के तहत एक-एक वर्ष के सश्रम कारावास तथा ?6000/-6000/-के अर्थ दंडसे दंडित किया। दोनों सजा साथ-साथ चलेगी प्रकरण में अभियोजन की ओर से पैरवी अपर लोक अभियोजक सतीश त्रिपाठी ने की।

## एक फरवरी को पेश होगा बजट, मगर नहीं होगी कोई बड़ी घोषणा-वित्त मंत्री सीतारमण

**नई दिल्ली, 7 दिसम्बर।** केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने कहा है कि एक फरवरी 2024 को पेश किए जाने वाले बजट में कोई बडी घोषणा नहीं होगी। ऐसा अगले साल होने वाले आम चुनावों को देखते हुए होगा। चुनावी साल में केंद्र सरकार सदन में लेखानुदान मांगें पेश करती है। वित्त मंत्री सीतारमण ने कहा कि यह सच है कि एक फरवरी 2024 को जो बजट घोषित किया जाएगा वह सिर्फ वोट ऑन अकाउंट होगा, क्योंकि हम चुनाव की तैयारी में होंगे। इसलिए सरकार जो बजट पेश करेगी, वह सिर्फ तब तक के लिए सरकारी खर्चों को पूरा करने के वास्ते होगा, जब तक कोई नई सरकार नहीं बन जाती। भारतीय उद्योग परिसंघ (सीआईआई) और वित्त मंत्रालय द्वारा आयोजित वैश्विक आर्थिक नीति मंच 2023 के दौरान सीतारमण ने कहा कि देश तब 2024 की गर्मियों में होने वाले लोकसभा चुनाव की तैयारी कर रहा होगा। ब्रिटिश परंपरा का पालन करते हुए एक फरवरी के बजट को वोट ऑन अकाउंट कहा जाएगा।

## मंदसौर का गौरव गाएं

दक्षिण में जिसके पशुपति विराजे
मां शिवाना जिनके चरण पखारे
सूर्य कुबेर नालछा आशीष बरसाए
आओ हमारे मंदसौर का गौरव गाएं।
हूण पर विजय स्तंभ यहां
यशोधर्मन की यश गाथा गाए
उदयन चातुर्मास से दशपुर जाए
आओ हमारे मंदसौर का गौरव गाए।
गुप्तानंद कृष्णानंद तपोस्थली यहां
ब्रह्मानंद काली माई ख्याति यहां
प्रत्यक्षानंद पशुपति अधिष्ठता भाए
आओ हमारे मंदसौर का गौरव गाएं।
वत्सभट्टी कालिदास के लेखे यहां
साहित्य संगीत क्रीडा स्थल है यहां
वीर भूमि पर समर्पण करते जाएं
आओ हमारे मंदसौर का गौरव गाएं।
मंदिर मस्जिद गुरुद्वारा गिरजाघर यहां
मालव माटी गंध यहां पसरती जाए
आओ हमारे मंदसौर का गौरव गाएं।

**भगवती प्रसाद गेहलोत, पिपलियामंडी**

## मंदसौर मंडी भाव

| उपज | आवक बोरी में | न्यूनतम | अधिकतम |
|---|---|---|---|
| मक्का | 166 | 2050 | 2201 |
| उडद | 15 | 5051 | 11000 |
| सोयाबीन | 5000 | 4500 | 4936 |
| गैहु | 2700 | 2400 | 3190 |
| चना | 75 | 5201 | 5871 |
| मसुर | 66 | 5050 | 5066 |
| धनिया | 229 | 6000 | 7622 |
| लहसुन | 11500 | 11501 | 23701 |
| मैथी | 360 | 5001 | 7700 |
| अलसी | 1055 | 4960 | 5251 |
| सरसो | 386 | 5011 | 5302 |
| तारामीरा | 00 | 00 | 00 |
| इसबगोल | 15 | 15700 | 19600 |
| प्याज | 3100 | 400 | 3590 |
| कलोंजी | 43 | 10000 | 16840 |
| डॉलर | 14 | 4941 | 12981 |
| तिल्ली | 4 | 15826 | 16492 |
| मटरसुखी | 15 | 2381 | 4098 |
| असालीया | 28 | 10100 | 10721 |

## केमिस्ट एसोसिएशन ने 2.21 लाख की सहयोग राशि जमा की

**नीमच, 7 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस।** जिला केमिस्ट एसोसिएशन द्वारा झंडा दिवस पर सैनिकों के कल्याण के लिए 2,21,000 रुपये की राशि जमा की गई है ड्रग इंस्पेक्टर एवं केमिस्ट एसोसिएशन के पदाधिकारी ने डाक बंगला नीमच पर झंडा दिवस रैली के शुभारंभ अवसर पर, कलेक्टर श्री दिनेश जैन को 2 लाख 21 हजार रुपए सैनिक कल्याण कोष में जमा कर उसकी जमा पर्ची कलेक्टर को प्रदान की । इस मौके पर एडीएम सुश्री नेहा मीना जिला पंचायत सीईओ श्री गुरु प्रसाद जिला सैनिक कल्याण अधिकारी कैप्टन श्री संजय दीक्षित व अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

## आरवी कॉलेज मनासा में चलाया मेरी मातृभाषा में मेरा हस्ताक्षर अभियान

**मनासा, 7 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस।** भारतीय भाषा उत्सव के अंतर्गत 25 सितंबर से 10 दिसंबर तक विभिन्न गतिविधियां एवं कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं इसी संदर्भ में आज दिनांक 7 दिसंबर को शासकीय रामचंद्र विश्वनाथ महाविद्यालय मनासा में 'मेरी मातृभाषा में मेरा हस्ताक्षर' अभियान चलाया गया। जिसमें महाविद्यालय के विद्यार्थियों में हिंदी भाषा में हस्ताक्षर करने हेतु प्रेरित किया और विद्यार्थियों एवं स्टाफ ने हिंदी भाषा में हस्ताक्षर करें। ताकि विद्यार्थियों में हिंदी भाषा के प्रति रूचि हो और वह अपना हस्ताक्षर हिंदी में ही करें इस हेतु प्रेरित किया। इस अवसर पर डॉ. अनिल जैन, डॉ. स्मिता रावत, प्रो. आमोद शर्मा, प्रो.आशीष पटेल सहित समस्त स्टाफ एवं महाविद्यालय के विद्यार्थी उपस्थित रहे।

# गौरव गाथाओं की अभिव्यक्ति है मंदसौर गौरव दिवस

**मंदसौर, 7 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस।** मध्यप्रदेश सरकार के प्रयासों से पिछले वर्ष से प्रदेश के प्रमुख शहरों के स्थापना दिवस का आंकलन कर उस दिन को गौरव दिवस के रूप में मनाने का एक क्रम प्रदेश में उदित हुआ। इसी क्रम में मंदसौर की स्थापना की खोज का प्रयास हुआ। मंदसौर के तत्कालीन कलेक्टर श्री गौतमसिंह ने इस विषय को सांसद श्री सुधीर गुप्ता, तत्कालीन विधायक श्री यशपालसिंह सिसौदिया, हुडको डायरेक्टर श्री बंशीलाल गुर्जर व नपाध्यक्ष श्रीमती रमादेवी गुर्जर के साथ नगर के वरिष्ठपत्रकार श्री सुरेन्द्र लोढा, प्रेस क्लब अध्यक्ष श्री ब्रजेश जोशी, इतिहासकार श्री कैलाशचन्द्र पाण्डे एवं नगर के प्रबुद्धजनों से इस विषय पर चर्चा की। सभी ने प्रयास किया तो निकलकर आया कि मंदसौर जिसका प्राचीन नाम

दशपुर था इसी स्थापना का काल सूर्य मंदिर की स्थापना के समय का रहा। उस काल में औलिंकर वंश के सम्राट यशोधर्मन ने एशिया की बर्बर जाति हूणों के साथ युद्ध किया था और हूणों के सरदार मिहिर कुल को हराया था। इस विजय के बाद विजय स्तम्भ बनवाया था जो आज मंदसौर से 8 कि.मी. दूर सौंधनी में आज भी विद्यमान है।

अफजलपुर जिसका पुराना नाम मढ था वहां पर सूर्य भगवान की प्रतिमा मिली जो उसी काल की थी उसे अफजलपुर के मंदिर में रखा गया। सूर्य प्रतिमा एवं यशोधर्मन की हूणों पर विजय का काल दशपुर की स्थापना का काल माना गया फिर भी उस काल को एक दिवस पर मनाने की कठिनाई का हल श्री ब्रजेश जोशी, श्री कैलाश पाण्डे ने संस्कृत के विभागाध्यक्ष नागपुर विश्वविद्यालय के डॉ. रामपाल शुक्ल से सम्पर्क किया जो वर्तमान में अहमदाबाद में निवासरत है। उन्होंने अपने अध्ययन एवं कालों की गणना का आंकलन कर 8 दिसम्बर का दिन दशपुर याने मंदसौर का स्थापना दिवस माना। उपर्युक्त सभी विद्वजनों के अथक प्रयास से मंदसौर का गौरव दिवस निश्चित हो पाया। फिर इस दिवस को मनाने के लिये नगर के प्रबुद्ध नागरिकों की समिति बनी। समिति ने तय किया कि, सौंधनी के विजय स्तम्भ के औलिंकर वंश सम्राट यशोधर्मन की मूर्ति को दशपुर नगर में स्थापित किया जाय। समिति के मार्गदर्शन में मूर्ति ने आकार लिया और पहली बार सम्राट यशोधर्मन की प्रतिमा को तेलिया तालाब पर स्थापित किया गया। इस प्रतिमा का अनावरण म.प्र. के मुख्यमंत्री श्री शिवराजसिंह चौहान ने गत वर्ष किया। साथ ही नगर के डॉ. विजयशंकर मिश्र एवं श्रीमती निर्मला कोरोसिया को नगर रत्न की उपाधि से अलंकृत किया गया। इस अवसर पर नगर में गौरव दिवस चल समारोह निकला व निर्माता निर्देशक प्रदीप शर्मा की फिल्म यशोधर्मन का प्रदर्शन हुआ एवं नंदकिशोर राठौर द्वारा दशपुर गौरव गान की प्रस्तुति कुशाभाऊ ठाकरे ऑडिटोरियम में की गई जो समसामयिक रही।

**नन्दकिशोर राठौर**

# विकसित भारत संकल्प यात्रा केन्द्रीय योजनाओं के सभी पात्र हितग्राहियों को लाभ दिलायेगी

**✻देश में हुए विकास का दर्शन करेंगे आम नागरिक ✻मध्यप्रदेश में आज से शुरू होगी यात्रा ✻जिला स्तर पर बनी समितियॉ और नियुक्त हुए नोडल अधिकारी ✻मुख्य सचिव श्रीमती राणा ने ली यात्रा तैयारियों की बैठक और दिये निर्देश**

**भोपाल, 7 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस।** केन्द्रीय योजनाओं के सभी पात्र हितग्राहियों को लाभ दिलाने और नवाचारी योजनाओं से देश हुए विकास से आम लोगों को परिचित कराने के लिये मध्?यप्रदेश में विकसित भारत संकल्प यात्रा का आगमन 8 दिसम्बर को होगा। यह यात्रा शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में से गुजरेगी और केन्द्रीय योजनाओं से वंचित हितग्राहियों को लाभान्वित करवायेगी। मध्?यप्रदेश में कृषि? और ग्रामीण विकास विभाग की यात्रा में अहम भूमिका रहेगी। मुख्य सचिव श्रीमती वीरा राणा ने विकसित भारत संकल्प यात्रा के संबंध में आज संबंधित विभागों के अधिकारियों की बैठक लेकर आवश्यक दिशा-निर्देश दिये और वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से जिला कलेक्टर्स से चर्चा कर यात्रा की तैयारियों की जानकारी ली। उल्लेखनीय है कि केन्द्र सरकार, राज्य सरकारों और केंद्रशासित प्रदेशों के साथ मिलकर लगातार प्रयास कर रही है कि केन्द्रीय योजनाओं का लाभ प्रत्येक पात्र हितग्राहियों को मिले। ग्राम स्वराज अभियान, विस्तारित ग्राम स्वराज अभियान, प्रमुख योजनाओं का शत प्रतिशत कवरेज सुनिश्चत करने संकल्प यात्रा निकाली जा रही है।

**विकसित भारत संकल्प यात्रा का प्रमुख उददेश्य–** ✻ क्षेत्र प्रचार की गतिविधियों आम नागरिकों में योजनाओ के प्रति जागरूकता लाना है। ✻ सभी पात्र हितग्राहियों तक योजनाओं की पहुंच बनाना जो किन्हीं कारणों से इन योजनाओं का लाभ लेने से वंचित रह गये हैं। ✻ केन्द्र की योजनाओं के संबंध में जानकारी का प्रसार करना। ✻ नागरिकों और लाभार्थयों से योजनाओं के संबंध उनके अनुभव जानना। विकसित भारत संकल्प यात्रा की गतिविधिया उन सभी 69 जिलों और अन्य जिलों से भी गुजरेगी जहाँ जनजातीय गौरव दिवस मनाया गया। ग्राम पंचायतों स्तर पर भी जन-जागरूकता की गतिविधियाँ संचालित की जायेगी जिसमें जागरूकता, सामुदायिक, सांस्कृतिक गतिविधियाँ शामिल हैं। इसके अलावा सूचना-शिक्षा-संचार वेन, आईटी प्लेटफार्म, और मोबाइल एप्लीकेशन भी उपयोग में लाये जायेंगे। राज्य सरकार, जिला, ग्राम पांचायत और स्थानीय शासन की समिति और केन्द्र सरकार के संगठन और संस्थाओं से प्लानिंग, समन्वय और निगरानी की जायेगी।

**ग्रामीण क्षेत्रों में यात्रा का उद्देश्य–** ग्रामीण इलाकों के लिये प्रमुख योजनाओं में आयुष्मान भारत, प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना, दीनदयाल अत्योदय योजना, प्रधानमंत्री उज्जवला योजना, प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना, प्रधानमंत्री किसान सम्मान, किसान क्रेडिट कार्ड, प्रधानमंत्री पोषण अभियान, हर घर जल, जल जीवन मिशन, प्रधानमंत्री स्वामित्व, जन धन योजना, जीवन ज्योति बीमा योजना, अटल पेंशन योजना, प्रधानमंत्री प्रणाम, नैनो फर्टलाइजर शामिल हैं। साथ ही जनजातीय परिवारों के कल्याण से संबंधित योजनाओं में सिकल सेल एनीमिया निवारण मिशन, एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालयों में प्रवेश, स्कॉलरशिप, वन अधिकार, वन-धन विकास केन्द्र शामिल हैं।

**शहरी क्षेत्रों में यात्रा का उद्देश्य–** शहरी क्षेत्रों में यात्रा के दौरान शहरी योजनाओं में प्रधानमंत्री स्वनिधि, प्रधानमंत्री विश्वकर्मा योजना प्रधानमंत्री उज्वला योजना, प्रधानमंत्री मुद्रा लोन, स्टार्ट-अप इंडिया, स्टैंड-अप इंडिया, आयुष्मान भारत योजना, प्रधानमंत्री आवास योजना, स्वच्छ भारत अभियान, प्रधानमंत्री ई-बस सेवा, अटल मिशन फॉर रिजुवेनेशन एंड अर्बन ट्रांसपोर्टेशन-अमृत योजना, प्रधानमंत्री भारतीय जन औषधि परियोजना, सौभाग्य योजना, डिजिटल पेमेंट इंफ्रास्ट्रक्चर, खेलो इंडिया, उडान, वंदे भारत ट्रेन, अमृत भारत स्टेशन योजना शामिल हैं। इन योजनाओं में पात्र हितग्राहियों को चिंहित कर लाभान्वित किया जायेगा।

**सर्वसुविधायुक्त मोबाइल वेन से होगा प्रचार-प्रसार–** शहरी क्षेत्रों में मोबाइल वेन उन 13 हजार 848 स्थानों पर जायेगी, जहाँ दस हजार से ज्यादा जनसंख्या है। मोबाइल वेन में एलईडी स्क्रीन, ऑडियो विजुअल सामग्री ब्रोशर, बुकलेट से सज्जत होगी। राज्य सरकार द्वारा निर्धारित नोडल अधिकारी और वरिष्ठ अधिकारियों की समिति बनाई गई है, जिसमें केन्द्रीय संगठन और संस्थानों के दो प्रतिनिधि रहेंगे। यह समिति सभी संबंधित विभागों से समन्वय स्थापित करेगी। राज्य स्तर पर कंट्रोल रूम स्थापित किया जायेगा।

**जिलेवार होंगे नोडल अधिकारी–** जिला कलेक्टर वरिष्ठ अधिकारियों की एक समिति का गठन करेंगे और जिला स्तर पर भारत सरकार के संगठनों/संस्थानों से दो प्रतिनिधियों को शामिल रहेंगी। आईटी पोर्टल पर डेटा को अंतिम रूप दिया जायेगा। वेन का आवंटन, रूट योजना, वेन का कार्यक्रम स्थल, जागरूकता के लिए जिले में प्रचार योजना तैयार करना, वेन का नोडल अधिकारी बनाना ग्राम पंचायत स्तर पर नोडल अधिकारी, ब्लॉक स्तर के अधिकारी, विभाग-वार कर्मचारी और शहरी निकायों में अभियान के समन्वय के लिए समितियों का गठन किया जायेगा।

**आईटी प्लेटफार्म और मोबाइल रिस्पांसिव प्लेटफार्म–** विकसित भारत संकल्प यात्रा में केन्द्र सरकार की विशेष भूमिका होगी। इसमें आईटी प्लेटफार्म और मोबाइल रिस्पांसिव प्लेटफार्म बनाने, आईईसी वेन के संचालन, जनजागरूकता और प्रचार सामग्री, राज्य और जिलों में नोडल अधिकारियों को नियुक्त करने में केन्द्र सरकार की भूमिका होगी। नोडल अधिकारी जिलों में, ग्राम स्वराज अभियान और जलशक्त अभियान आदि की गतिविधियों से समन्वय स्थापित करेंगे। वे राज्य सरकार से प्रगति और केन्द्रीय योजनाओं के कव्हरेज के संबंध में भी जानकारी लेंगे।

# आइएमए ने सशस्त्र झंडा दिवस पर 51000 रुपए की राशि का चेक प्रदान किया

**नीमच, 7 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस।** इंडियन मेडिकल एसोसिएशन नीमच शाखा ने सैनिकों एवं उनके आश्रितों के कल्याण के लिए कलेक्टर दिनेश जैन के आव्हान पर जिले के नागरिकों व समाजसेवी संगठनों के साथ चिकित्सा जगत से जुड़े चिकित्साकों में भी आर्थिक सहयोग के प्रति अपार उत्साह देखने को मिल रहा है।इसी क्रम में गुरुवार को झंडा दिवस के उपलक्ष्य में जिला प्रशासन द्वारा आयोजित रैली में आई एम ए जिला इकाई के चिकित्सकों द्वारा 51000 की राशि का चेक प्रदान किया गया। इस अवसर पर विगत 10 वर्षो से लगातार आइएमए संगठन में पद पर रहते हुए सेवारत आईएमए नीमच इकाई अध्यक्ष डॉ अशोक जैन ,सचिव डॉक्टर मनीष चमडिया, कोषाध्यक्ष डॉक्टर जेसी वर्मा, डॉ. आर. पी. माहेश्वरी, डॉ दीपक सिंहल, डॉक्टर संजय गुप्ता, डॉक्टर विपुल गर्ग ,डॉक्टर स्वप्निल वधवा की उपस्थिति में सशस्त्र सैनिकों की सहायता के लिए नीमच जिले के चिकित्सकों द्वारा यह राशि संग्रहित की गई और कल्याण कोष में जमा करने के लिए जिला कलेक्टर दिनेश जैन को प्रदान की गई। अभियान में आईएमए के सभी चिकित्सकों ने सहयोग प्रदान किया। उल्लेखनीय है कि आईएमए द्वारा पूर्व में निर्धन एवं निराश्रित महिलाओं को परिवार पालन व रोजगार के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनने के लिए 21 सिलाई मशीनें महिलाओं को प्रदान की गई थी इसके साथ ही संगठन द्वारा शीघ्र ही सैनिकों को रियायती दर पर चिकित्सा परामर्श एवं चिकित्सा व्यवस्था प्रदान करने के प्रस्ताव पर भी विचार विमर्श किया गया है। शीघ्र ही आगामी माह में मानवता की सेवार्थ गरीब झुग्गी झोपड़ीयों व पिछड़ी बस्तियों में निर्धन एवं निराश्रितों को स्वस्थ जीवन प्रदान करने के उद्देश्य से नि:शुल्क चिकित्सा शिविर आयोजित कर नि:शुल्क चिकित्सा परामर्श एवं चिकित्सा सुविधा प्रदान की जाएगी।

**दानपात्र से मिले 23 लाख 39 हजार रुपए**

श्री पशुपतिनाथ मंदिर की दान पेटी से प्राप्त दान राशि की गणना का कार्य 2 दिवस में पूर्ण किया गया। जिसमें कल 6 दिसंबर को 18 लाख 36 हजार 300 रुपए प्राप्त हुए। 7 दिसंबर को 5 लाख 3 हजार 548 रुपए गणना का कार्य में प्राप्त हुए। इस प्रकार दो दिन की गणना में 23 लाख 39 हजार 848 प्राप्त हुए। विदेशी मुद्रा में अमेरिका 100, अमेरिका का 1, बहरीन का 1, सिंगापुर का 2, येहांग का 10 एवम 50 का नोट, चांदी के छोटे-मोटे आइटम 115 ग्राम आदि प्राप्त हुए।

# रिटर्निंग एवं सहायक रिटर्निंग अधिकारी नियुक्ति

**नीमच, 7 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस।** जिले की पंचायतों में रिक्त पंच पद के उप निर्वाचन उत्तरार्द्ध 2023 के तहत कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी व्दारा रिटर्निंग एवं सहायक रिटर्निंग अधिकारी नियुक्त किए गए है। तहसील क्षेत्र नीमच ग्रामीण की रिक्त 20 पंचायतों में पंच पद के निर्वाचन के लिए तहसीलदार नीमच ग्रामीण श्री प्रेमशंकर पटेल को रिटर्निंग आफिसर एवं नायब तहसीलदार सुश्री कविला कडेला व सुश्री जागृति जाट को सहायक रिटर्निंग आफिसर नियुक्तन किया गया है। इन पंच पद के उप निर्वाचन के लिए न्यायालय तहसीलदार नीमच में नाम निर्देशन पत्र लिए जाऐंगे। तहसील क्षेत्र जावद की ग्राम पंचायतों में रिक्त्य 6 पंच पद के लिए तहसीलदार जावद श्री यशपाल मुजाल्दक, को रिटर्निंग आफिसर एवं तहसीलदार श्री शत्रुघन चर्तुवेदी को सहायक रिटर्निंग आफिसर नियुक्ता किया गया है। नाम निर्देशन पत्र न्यांयालय तहसीलदार जावद में लिए जावेंगे। मनासा तहसील क्षेत्र की ग्राम पंचायतों में रिक्तय पंच पद के 4 स्थोनों के लिए न्य्यालय तहसीलदार मनासा में नाम निर्देशन पत्र लिए जावेंगे। तहसीलदार मनासा श्री बीके मकवाना रिटर्निंग आफिसर एवं नायब तहसीलदार श्री रूपसिह राजपूत को सहायक रिटर्निंग आफिसर नियुक्तं किया गया है। पंचायतों के उप निर्वाचन 2023 उत्तफराद्ध के निर्वाचन कार्यक्रम की घोषणा होने के साथ ही संबंधीत क्षेत्रों (रिक्तन पद) में आदर्श आचरण संहिता प्रभावशील हो गई है, जो संबंधित ग्राम पंचायत/निर्वाचन क्षेत्र और वार्ड क्षेत्र के निर्वाचन परिणाम की घोषणा की तिथि तक प्रभावशील रहेगी। जिला दण्डाचधिकारी श्री दिनेश जैन व्दावरा पंचायत उप निर्वाचन 2023 के तहत संबंधित निर्वाचन क्षेत्रों में दण्डद प्रक्रिया संहिता 1973 की धारा 144 के तहत प्रतिबंधात्मकक आदेश जारी किए गए है।

# विश्व एड्स पखवाड़े के तहत मानव श्रृंखला बनाई

**मजदूरों व ट्रक चालकों को एचआईवी से बचाव के तरीके बताए**

**मंदसौर, 7 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस।** एडवांस इनफॉरमेशन मैनेजमेंट सोसायटी लिंक वर्कर स्कीम मंदसौर द्वारा विश्व एडदिवस पखवाड़े के अंतर्गत महारानी लक्ष्मीबाई चौराहे पर मानव श्रृंखला बनाई गई व समस्त मजदूर वर्ग को एचआईवी के चार कारण व उससे बचने के उपाय बताए गए।

इसी के साथ संस्था द्वारा निपानिया ट्रक होल्डिंग पॉइंट जहाँ सभी ट्रक चालक रुकते है वहाँ उनके बीच जाकर उनको एचआईवी से किस प्रकार बचाव किया जा सकता है इस संबंध में चर्चा के माध्यम से बताया। जागरूकता कार्यक्रम कराए गए पोस्टर एवं पेंपलेट के माध्यम से उनको जानकारी दी गई। सभी को टोल फ्री नम्बर 1097 के विषय में भी जानकारी दी गयी गयी व एचआईवी जांच करवाने हेतु प्रेरित किया गया। व अन्य स्वास्थ्य संबंधी जानकारी प्रदान करी। कार्यक्रम में परियोजना अधिकारी लोकेंद्र सिंह तोमर, सोनू पालीवाल, सपना चौहान, मेघा सालवी, राहुल चौहान मुकेश दाहिमा , नवीन पोखाल आदि उपस्थित रहे।

# उत्पादकों के आयात में कमी को लेकर सांसद गुप्ता ने लोकसभा में किया प्रश्न

**मंदसौर, 7 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस।** सरकार द्वारा कतिपय वस्तुओं की आवक शिपमेंट पर अंकुश लगाते के लिए उठाए गए कदम, उत्पादन सम्बद्ध प्रोत्साहन योजना और अनिवार्य गुणवत्ता मानदंड देश को टीवी, टायर आदि जैसे गैर-जरूरी उत्पादों के आयात की कम करने में सहायता करने को लेकर सांसद सुधीर गुप्ता ने लोकसभा में प्रश्न किया। सांसद गुप्ता ने कहा कि सरकार का ऐसा कदम देश में किस प्रकार से गैर-जरूरी आयातित वस्तुओं का विशेषण और नियंत्रण करने और आयात गहन क्षेत्र में घरेलू उत्पादन क्षमत्व बढ़ाने में सहायक है। विगत तीन और वर्तमान वित वर्ष के दौरान गैर जरूरी वस्तुओं के आयात में कमी लाकर सरकार द्वारा कुल कितनी राजस्व राशि बचाई गई और सरकार ने इस संबंध में हितधारकों के साथ कोई परामर्श किया है। प्रश्न के जवाब में वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय में राज्य मंत्री श्रीमती अनुप्रिया पटेल ने बताया कि घरेलू विनिर्माण को विश्व स्तर पर प्रतिस्पर्धी बनाने के उद्देश्य से पीएलआई योजनाएं शुरू की गई है, जिन्हें 14 क्षेत्रों में लागू किया गया है। यह सुनिश्चित करने के लिए अनिवार्य गुणवता मानदंड बनाए गए है कि ग्राहकों की आवश्यक मानकों को पूरा करने वाले गुणयता युक्त उत्पादों तक पहुंच हो। इन पहली से देश को विनिर्माण क्षमता बढ़ाने और अपमानक उत्पादकों के आयात को कम करने में मदद मिलने की उम्मीद है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि जो वस्तुएं आयात की जाती है यह अवमानक गुणवता की न हो, सीमा शुल्क प्राधिकरण सीमाओं पर गैर-अनुपालन याने सामान के प्रवेश को बुद्धिमानी से रोकने के लिए जोखिम-आधारित ढाचे का पालन करता है। राष्ट्रीय मानकों को प्रभावी बनाने के लिए सीबीआईसी में एक टास्क फोर्स का भी गठन किया गया है। उन्होने बताया कि टीवी और टायर जैसे आयातित सामानों का संबंध है, व्यापार आंकड़ों से पता चलता है कि ऐसे उत्पादों के आयात की कई श्रेणियां हैं जहां आयात में काफी कमी आई है। वाणिज्य विभाग निम्नलिखित व्यापक कार्यनीति घरेलू आपूर्ति की कठिनाइयों का समाधान करना और घरेलू उत्पादन के अवसरो/क्षमता में वृद्धि पर ध्यान देना , व्यापार उपचार विकल्पों का समय पर उपयोग, गुणवत्ता नियंत्रण, उत्पत्ति के नियमों को लागू करना, टैरिफ उपाय/इनवर्टड शुल्क सुधार, और आयात निगरानी पर आयात के मुद्दे पर समय-समय पर विभिन्न स्तरों पर संबंधित मंत्रालयों/विभागों और अन्य हितधारकों की नियमित रूप से निगरानी और संवेदनशील बना रहा है। इसके अलावा, पैथिक मूल्य श्रृंखला में भारत के बढ़ते एकीकरण को ध्यान में रखते हुए निर्यात को बढ़ावा देने और आयात पर निर्भरता को कम करने के लिए सरकार द्वारा समय सरकारी दृष्किोण के साथ कई कदम उठाए गए हैं।

# मध्यप्रदेश को वन्यजीव पर्यटन के लिए मिला सैंक्चुअरी एशिया अवॉर्ड

**नई दिल्ली में हुआ टॉफ टाइगर्स वाइल्डलाइफ टूरिज्म अवॉर्ड, सर्वश्रेष्ठ सतत वन्यजीव पर्यटन राज्य कैटेगरी के लिये मिला सम्मान**

**मंदसौर, 7 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस।** मध्यप्रदेश टूरिज्म बोर्ड को टॉफ टाइगर्स वाइल्डलाइफ टूरिज्म अवार्ड में 'सर्वश्रेष्ठ सतत वन्यजीव पर्यटन राज्य' (द बेस्ट सस्टेनेबल वाइल्डलाइफ टूरिज्म स्टेट) के लिए सैंक्चुअरी एशिया अवॉर्ड से नई दिल्ली में सम्मानित किया गया है। मध्यप्रदेश को भारतीय उपमहाद्वीप में प्रकृति, पर्यटन, उद्योग, सतत प्रथाओं और रिस्पॉन्सिबल टूरिज्म में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए पुरस्कृत किया गया है। प्रमुख सचिव पर्यटन और संस्कृति एवं प्रबंध संचालक टूरिज्म बोर्ड श्री शिव शेखर शुक्ला ने सम्मान पर खुशी जाहिर करते हुए कहा कि, मध्यप्रदेश देश का टाइगर स्टेट है और दुनिया से टाइगर्स को देखने के लिए पर्यटक यहां के राष्ट्रीय उद्यानों में पहुंचते हैं। प्रदेश में पर्यटकों की संख्या बढ़ाने के साथ-साथ पर्यावरण पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव को कम करने की जिम्मेदारी भी बोर्ड की है। इसलिए वन्य क्षेत्रों के आस-पास ईको-फ्रेंडली होमस्टे, अपशिष्ट प्रबंधन, पर्यटकों में जागरूकता लाने जैसे विभिन्न प्रयास किये जा रहे हैं।

**पर्यटन पर आधारित शॉर्ट फिल्म और प्रेजेन्टेशन–** समारोह में मध्यप्रदेश पर्यटन द्वारा प्रदेश के विभिन्न पर्यटन गंतव्यों एवं उत्पादों पर आधारित एक लघु फिल्म प्रदर्शित की गई। ऑडियो-विजुअल प्रेजेन्टेशन के माध्मय से मध्यप्रदेश के विभिन्न एतिहासिक, प्राकृतिक, आध्यात्मिक, लोक एवं शिल्प कला एवं वन्यजीव पर्यटन पर आधारित जानकारी साझा की गई। अतुल्य भारत के दिल 'मध्यप्रदेश' को घूमने के लिए एक आकर्षक एवं आदर्श गंतव्य के रूप में चित्रित किया गया। प्रदेश आध्यात्मिकता, प्राकृतिक वैभव, वन्य जीवन और सांस्कृतिक आभा को समेटे हुए है, जो पर्यटकों को अभिभूत करता है। टूरिज्म बोर्ड की ओर से यह पुरस्कार उप संचालक श्री युवराज पडोले ने ग्रहण किया।

**टाइगर, चीता एवं लेपर्ड स्टेट ऑफ इंडिया–** मध्यप्रदेश वन्यजीवों की दृष्टि से एक संपन्न राज्य है। 12 राष्ट्रीय उद्यानों और 24 वन्यजीव अभ्यारण्यों के साथ, विभिन्न पौधों, जानवरों और पक्षियों जैसे प्राकृतिक संसाधनों से समृद्ध है। देश में सर्वाधिक टाइगर्स मध्यप्रदेश में होने के कारण 'टाइगर स्टेट ऑफ इंडिया' होने का गौरव प्राप्त है। म.प्र. में वर्तमान में 785 टाइगर हैं। मध्यप्रदेश को 'टाइगर स्टेट ऑफ़ इंडिया' के नाम से जाना जाता है। इसके साथ ही प्रदेश को लेपर्ड स्टेट और घड़ियाल स्टेट का भी गौरव प्राप्त है। कूनो राष्ट्रीय उद्यान में चीतों के आगमन ये प्रदेश को चीता स्टेट के रूप में मान्यता मिली है।

# युवा छात्र-छात्राओं को एचआईवी/एड्स से बचने के उपाय बतलाएं

**मंदसौर, 7 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस।** एच.आई.वी./ एडकी रोकथाम के लिए पखवाडा मनाया जा रहा है। इसी क्रम में महाराणा प्रताप शासकीय महाविधायल सुवासरा में एच.आई.एस./ एड पर जानकारी दी गई , जिसमें एच.आई.वी./ एड चार कारणो से फैलता है पहला असुरक्षित यौन सम्बीध बनाने से , एच.आई.वी.संक्रमित सुई/ सीरिंज के साझा उपयोग, एच.आई.वी. संक्रमित रक्त से एवं संक्रमित मॉ से होने वाले शिशु को इन के आलावा कोई संक्रमण का कारण नहीं है। युवा कैसे अपना ध्यान रखे और कैसे बचे। समाज में एच.आई.वी./एड को रोकने के लिए अपनो से एच.आई.वी./एड पर चर्चा करें। उत्तब जानकारी श्री राजेश रजक जिला पर्यवेक्षक जिला एडरोकथाम एवं नियंत्रण इकाई मन्दीसौर द्वारा दी गई। छात्र एवं छात्राओं प्रश्नक किये गये। सही उत्त्र देने वाले को पुरूस्का र दिये गये। उपरोक्तं गतिविधियॉ डॉ. जी.एस.चौहान सी.एम.एच.ओ. एवं डॉ निशांत शर्मा नोडल अधिकारी के मार्गदर्शदन में जिले में आयोजित हो रही है। इस अवसर पर श्री दिनेश पाटीदार सहां. प्रध्यासपक, श्री सुरेश देवड़ा सहां. प्रध्याकपक, श्री भूपेन्द्रा रठा गंथपाल, सुश्री अंजली व्याोस सहां. प्रध्यावपक, श्री राजेश चन्द्र वंशी लेबटेक्निशियन एवं कालेज स्टोफ श्री नीरज चौहान,श्री राजेश कल्यांणे, श्री अरविन्द्रर जोशी एवं स्टुवडेन्टच उपस्थित थे। साधन्यवाद कार्यक्रम सम्बंदध हुआ।

## कलेक्टर दिनेश जैन ने झंडा दिवस का झंडा लगाया

**नीमच, 7 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस।** सशस्त्र सेना झंडा दिवस की रैली के दौरान विजय टॉकीज चौराहे पर कलेक्टर श्री दिनेश जैन ने वरिष्ठ प्रेस फोटोग्राफर श्री विष्णु त्रिवेदी को स्वयं अपने पास बुलाकर अपने हाथों से उन्हें सशस्त्र झंडा दिवस का झंडा लगाया। इस अवसर पर विभिन्न विभागों के अधिकारी कर्मचारी एवं भूतपूर्व सैनिक तथा स्वयंसेवी संस्थाओं के पदाधिकारी उपस्थित थे।

# भगवान पशुपतिनाथ लोक की उपलब्धि लेकर आया था मन्दसौर का गौरव दिवस

**मंदसौर को अविस्मरणीय उपलब्धि देने पर मुख्यमंत्री का सिसोदिया ने माना आभार**

**मंदसौर, 7 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस।** मंदसौर के सम्राट यशोधर्मन से जुड़ा मंदसौर का गौरव दिवस भगवान पशुपतिनाथ लोक की अविस्मरणीय उपलब्धि लेकर गत वर्ष आया है। मेरी मांग पर मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने तत्काल उज्जैन के महाकाल लोक की तर्ज पर मंदसौर में भी पशुपतिनाथ लोक की परिकल्पना को साकार करने की घोषणा की और 25 करोड रुपए की राशि स्वीकृत की, जिससे कार्य भी प्रारंभ हो चुका है। मंदसौर के लिए मिली यह उपलब्धि हमेशा मेरी स्मृति में रहेगी और ऊर्जा भी देगी।

यह बात पूर्व विधायक भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश प्रवक्ता यशपाल सिंह सिसोदिया ने एक वक्तव्य में कहीं। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान द्वारा पूरे प्रदेश में शहर के गौरव दिवस को मनाने का निर्णय लिया था जिसके तहत गत वर्ष मंदसौर में भी सम्राट यशोधर्मन की विजय गाथा से जुडे 8 दिसंबर को प्रतिवर्ष गौरव दिवस के रूप में मनाना प्रारंभ किया, इसमें मंदसौर शहर की जनता ने भी हिस्सेदारी तय की और प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान का भी इस महत्वपूर्ण दिवस पर मंदसौर आगमन हुआ। गौरव दिवस के मौके पर पुरा संपदा को खंगालने का प्रयास किया और मंदसौर के सम्राट यशोधर्मन के कृतित्व और व्यक्तित्व के बारे में भी हर व्यक्ति को जानने का मौका मिला। श्री सिसोदिया ने कहा कि इस महत्वपूर्ण अवसर पर मेरी मांग पर मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने शहर का गौरव तब और बढ़ा दिया जब राजाधिराज भगवान पशुपतिनाथ लोक की परिकल्पना को साकार करने की घोषणा की 25 करोड रुपए की प्रारंभिक कार्य योजना बनी और उज्जैन के महाकाल लोक की तर्ज पर मंदसौर में भी भगवान पशुपतिनाथ लोक का कार्य प्रारंभ हो चुका है। यह महत्वपूर्ण उपलब्धि गौरव दिवस से जुड़ी है जो मुझे सदैव स्मृति में रहेगी और एक नई ऊर्जा भी देती रहेगी।

## कल लगेगी नपा में नेशनल लोक अदालत

**मंदसौर, 7 दिसंबर गुरु एक्सप्रेस।** नपाध्यक्ष श्रीमती रमादेवी बंशीलाल गुर्जर उपाध्यक्ष श्रीमती नम्रता प्रितेश चावला, राजस्व समिति सभापति श्रीमती कौशल्या बंधवार, सीएमओ श्री सुधीर कुमार सिंह ने बताया कि नगर के समस्त सम्पतिकर समेंकीतकर जलकर उपभोक्ता को सूचित किया जाता हे की सम्पतिकर समेंकीतकर जलकर बकायादारो को दिनाक् 09/12/2023 को नेशनल लोक अदालत का आयोजन हो रहा हे। प्रात 10.30 बजे से सांय 5 बजे तक नपा कार्यालय परिसर में नेशनल लोक अदालत लगेगी जिसमे पेनल्टी सरचार्ज ब्याज की बकाया राशि मे छुट दी जा रही हे सभी बाकायादार छुट का लाभ लेवे।


# N OTICE

I "YASMIN" Resident of Burhani Nagar Mandsaur (M.P.) Have Changed My Name to "YASMIN GHADIYALI''For All Future Purpose.

Sincerely

YASMIN GHADIYALI

W/o MAZHAR HUSAIN

Burhani Nagar Mandsaur (M.P.)-458001

**कार्यालय अतिरिक्त क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी मंदसौर (मप्र)**

क्रमांक/ मंदसौर दिनांक

**विज्ञप्ति**

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि वाहन स्वामी चेतन मालवीय पिता मांगीलाल मालवीय निवासी ग्राम लसुड़ावन, जिला मंदसौर की मृत्यु दिनांक 13.02.2021 को हो गई है। इनके वाहन रजिस्ट्रेशन क्रमांक एमपी 14 जीसी 1426 को इनके पिता मांगीलाल मालवीय ने अपने नाम पर अंतर्गण दर्ज कराने हेतु इस कार्यालय में मूल दस्तावेज प्रस्तुत किये है।

इस प्रकाशन अवधि के सात दिवस में यदि किसी को आपत्ति हो तो इसे कार्यालय में प्रस्तुत करें। इसके पश्चात वाहन श्री मांगीलाल मालवीय के नाम से अंतरण कर दिया जावेगा।

अतिरिक्त क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी, मंदसौर

**कार्यालय अतिरिक्त क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी मंदसौर (मप्र)**

क्रमांक/ मंदसौर दिनांक

**विज्ञप्ति**

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि वाहन स्वामी प्रमोद भाटी पिता कन्हैयालाल भाटी निवासी किटियानी, जिला मंदसौर की मृत्यु दिनांक 21.12.2022 को हो चुकी है। इनके वाहन रजिस्ट्रेशन क्रमांक एमपी 14 सीसी 4193, एमपी 14 एमआर 8512 एवं एमपी 14 एमजेड 4068 को इनकी पत्नी श्रीमती मंगला भाटी ने अपने नाम पर अंतर्गण दर्ज कराने हेतु इस कार्यालय में मूल दस्तावेज प्रस्तुत किये है।

इस प्रकाशन अवधि के सात दिवस में यदि किसी को आपत्ति हो तो इसे कार्यालय में प्रस्तुत करें। इसके पश्चात वाहन श्रीमती मंगला भाटी के नाम से अंतरण कर दिया जावेगा।

अतिरिक्त क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी, मंदसौर


स्वत्वाधिकारी, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक आशुतोष नवाल के लिए गुरु मीडिया एण्ड इंटरटेनमेन्ट कम्पनी, शक्ति नगर मन्दसौर से मुद्रित एवं 77 लक्ष्मीनगर, वेदान्त विहार मन्दसौर से प्रकाशित। (हर प्रकार के विवाद का न्याय क्षेत्र मन्दसौर रहेगा) संपादक– आशुतोष नवाल RNI-MPHIN2006/20356
समाचार पत्र में छपे विज्ञापनों के लिए समाचार पत्र उत्तरादायी नहीं है एवं विज्ञापनो में प्रकाशित विचार विज्ञापनदाता की निजी राय है। इससे समाचार पत्र का कोई संबंध नहीं है। फोन 495831, मो. 9425105927,28 ashugurumds@gmail.com, ashu_guru2@yahoo.co.in